सितम्बर 2021

दादावाणी

Retail Price ₹ 15

यह कुदरत ही है। तो यह प्रवाह अविनाशी की तरफ ही जा रहा है। चढ़ने और गिरने के बाद, सभी अनुभव करने के बाद अविनाशी की तरफ जाना है। अनुभव किए बिना तो वहाँ पर पहुँच ही नहीं सकते। केवलज्ञान यानी तमाम प्रकार के अनुभवों का संग्रहस्थान।

अडालज : DMHT शिविर : ता. 7-8 अगस्त 2021

अडालज : PMHT शिविर : ता. 11-16 अगस्त 2021

अडालज : ज्ञानविधि : ता. 15 अगस्त 2021

वर्ष : 16 अंक : 11
अखंड क्रमांक : 191
सितम्बर 2021
पृष्ठ - 32

Editor : Dimple Mehta
© 2021
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधरसिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : 9328661166-77
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
5 साल
भारत : 650 रुपये
यू.एस.ए. : 60 डॉलर
यू.के. : 45 पाउन्ड
वार्षिक
भारत : 150 रुपये
यू.एस.ए. : 15 डॉलर
यू.के. : 10 पाउन्ड
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से
संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

कुदरत की अथाह प्लानिंग में अहंकार की घड़ाई

संपादकीय

यह जगत् स्वभाव से चल रहा है, स्वभाव से बाहर गया ही नहीं है। यह जो व्यवहार है, वह पूरा ही समसरण मार्ग है। समसरण मार्ग यानी कि निरंतर प्रवाह रूप से बहता परिवर्तनशील मार्ग, जो एक क्षण के लिए भी स्थिर नहीं हुआ है। ऐसे बहते हुए जगत् का स्वरूप ज्ञानियों को दिखाई दिया और वे दूसरों को भी दिखा पाए।

जगत् अनादि अनंत है। उसमें जीव उत्क्रांति प्राप्त करते ही रहते हैं। इस समसरण मार्ग में जीवों के 3 भाग किए गए हैं। 1) अव्यवहार राशि- जो स्टॉक में पड़ा हुआ माल है, जहाँ उत्क्रांति नहीं होती। 2) व्यवहार राशि- इसमें स्टॉक से बाहर, व्यवहार में जीव की उत्क्रांति होती है। और 3) सिद्ध क्षेत्र! उत्क्रांतिवाद में जीव एकेन्द्रिय, दो इन्द्रिय इस तरह से 'डेवेलप' होते-होते मनुष्य में आता है और मनुष्य में आने के बाद 'इगोइज़म' होने की वजह से कर्ता बनता है। अत: फिर कर्म के अनुसार उसे फल भुगतने पड़ते हैं। जब 'डेबिट' करता है तब जानवर या तो नर्कगति में जाना पड़ता है और जब 'क्रेडिट' करता है तब मनुष्य या तो देवगति मिलती है।

इस तरह कुदरत की अथाह प्लानिंग में प्रत्येक जीव समसरण मार्ग के बहते हुए प्रवाह में तरह-तरह के उतार-चढ़ाव में से होकर गुजरता है। उत्क्रांति होते-होते, प्रत्येक लेवल का अनुभव करते हुए, आगे जाकर खुद के अंतिम मूल जगह पर पहुँचता है। मूल जगह पर पहुँचने से पहले जीव संसार में किस कारण से भटकता है? अहंकार के कारण। अहंकार के उत्पन्न होने की वजह से उलझन होती है और उलझ जाता है।

प्रस्तुत अंक में परम पूज्य दादाश्री बताते हैं कि समसरण मार्ग में अहंकार का जो कुदरती रूप से डेवेलपमेन्ट होता है, उसके पीछे कुदरत के कुछ नियम सूक्ष्म में काम कर रहे हैं। जैसे कि कुदरत क्या है, व्यवस्थित और कुदरत की लिंक, नियति का प्रवाह, मनुष्य जन्म में अहंकार का उत्पन्न होना और अहंकार का दखल, कुदरत की खुराक ही अहंकार है, सर्जन है अहंकार का और विसर्जन कुदरत का, सत्ता देने के कुदरती नियम, कुदरत आपका ही फोटो है, कुदरत को समझना ही विज्ञान है आदि के बारे में यहाँ पर सुंदर स्पष्टता मिलती है।

महात्माओं को व्यवस्थित की आज्ञा के पालन में सहायक हो इस हेतु से कुदरत के नियम और अहंकार की लिंक से संबंधित वाणी यहाँ संकलित हुई है। इसका प्रैक्टिकली जीवन में उपयोग हो ताकि डिस्चार्ज अहंकार के उतार-चढ़ाव के समय इस ज्ञान से समता रहे और साथ ही यह भी पक्का होता जाए कि प्रत्येक संयोग अहंकार को ठिकाने रखने के लिए आता है, रिपेयर करने के लिए आता है। मेरी ही गढ़ाई के लिए है और अंत में तो इस ज्ञान से ही कुदरती संयोग मुझे अपनी मूल जगह तक पहुँचाएँगे, ऐसी भावना रखकर परम पूज्य दादाश्री की वाणी का आराधन हो, यही अभ्यर्थना।

- जय सच्चिदानंद

कुदरत की अथाह प्लानिंग में अहंकार की घड़ाई

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

विज्ञान के बिना कुदरत की थाह नहीं पा सकते

प्रश्नकर्ता : कुदरत अर्थात् क्या?

दादाश्री : कुदरत अर्थात् 'साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स' है।

प्रश्नकर्ता : विज्ञान ही कुदरत है न? कुदरत और विज्ञान दोनों एक ही है?

दादाश्री : 'कुदरत को समझना' वह है विज्ञान और 'कुदरत को नहीं समझना' वह है अज्ञान। कुदरत को समझना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : यानी कुदरत और विज्ञान आपस में कितने जुड़े हुए हैं?

दादाश्री : नेचर (कुदरत) क्या है और किस प्रकार चल रही है? नाश कैसे होती है? इन सब का वर्णन साइन्स (विज्ञान) करता है।

प्रश्नकर्ता : कितनी सहजता से समझा दिया कि इसका वर्णन यह करता है, बस हो गया!

दादाश्री : बस! और फिर क्या?

प्रश्नकर्ता : ज़रा विस्तार से समझाइए न!

दादाश्री : ऐसा है न, कि यह जो वर्णन करते हैं कि **2H+O** तो पानी बन जाता है। उसी प्रकार यह नेचर और यह विज्ञान है। कुदरत उसे कहते हैं कि जिसमें बिल्कुल भी विरोधाभास न हो। **2H** और **O**, दोनों इकट्ठे होते हैं, दूसरे कुछ संयोग इकट्ठे होते हैं तो उससे पानी ही बनता है तेल नहीं। यह तो 'साइन्स' है। यह पूरा जगत् तो विज्ञान से चल रहा है।

कुदरत कोई चीज़ नहीं है। कुदरत अर्थात् संयोगों का सम्मेलन होना। संयोगों के सम्मेलन होने का प्रयत्न होने लगे तो वह कुदरत है और उन संयोगों का सम्मेलन हो जाए तो वह है 'व्यवस्थित'।

व्यवस्थित अर्थात् 'साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स।' उसे लोग 'नेचर'-कुदरत कहते हैं। जो भी संयोग इकट्ठे होते हैं वे अपने-अपने स्वाभाविक भाव दिखाकर, मिलकर फिर नई तरह के भाव दिखाते हैं। '**H2**' और '**O**' के मिलने से पानी बनता है! वैसे ये इकट्ठे होते हैं, बिखर जाते हैं। खाना-पीना फिर संडास जाना, ये सब 'साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स' हैं।

प्रश्नकर्ता : ये वैज्ञानिक संयोगिक प्रमाण इकट्ठे हों तो उनके पीछे कोई शक्ति तो है न?

दादाश्री : वह जीवंत शक्ति नहीं है, वह जड़ शक्ति है। जड़ और चेतन की 'मिक्सचर' शक्ति है। उसमें जड़ का विशेष भाव हो गया है। इसमें आत्मा तो अनादि काल से जैसा है वैसा, वैसे का वैसा ही रहा है।

समझते हैं एक ही, कुदरत और व्यवस्थित को

प्रश्नकर्ता : 'कुदरती शक्ति और व्यवस्थित शक्ति' ये दोनों एक ही हैं या अलग-अलग?

दादाश्री : कुदरती शक्ति को तो आप अपनी भाषा में समझते हो न? कुदरती शक्ति को मैं क्या कहता हूँ? 'साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स'। यह आपको गुजराती में समझ में नहीं आएगा इसलिए मैंने आपको 'व्यवस्थित शक्ति' दी है। बहुत सूक्ष्म बात है।

प्रश्नकर्ता : व्यवस्थित और कुदरत इनमें कोई फर्क है क्या?

दादाश्री : कुदरत को यदि इस तरह कुदरत कहूँ न, तो लोगों को समझ में नहीं आएगा। वास्तव में कुदरत क्या है? 'साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स' है। कुदरत का यदि इंग्लिश करने जाए तो लोग उसे 'नेचर' कहेंगे। वास्तव में वह 'नेचर' नहीं है, वह 'साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स' है। जिस प्रकार **2H** और **O** के मिलने से बरसात होती है और लोग कहते हैं कि कुदरत बरसा रही है। लेकिन यदि कुदरत कहेंगे तो लोग उसका दुरुपयोग करेंगे और नेचर हो जाएगा। लोग समझते नहीं हैं इसलिए मैंने अलग कर दिया है।

इन सारे संयोगों से सब बदलाव होता रहता है। इन साइन्टिफिक संयोगों से सब बदलाव होते रहते हैं। जब बदलाव होता है, उस समय वह कुदरती शक्ति कहलाती है। ये सूर्यनारायण की उपस्थिति और मौसम की गर्मी और नीचे समुद्र, उससे भाप बनकर ऊपर जाती ही रहती है।

प्रश्नकर्ता : वह सब कुदरत है?

दादाश्री : कुदरती। ये सारे संयोग उत्पन्न होते हैं। कोई कुछ भी नहीं करता है। गर्मी के ताप की उपस्थिति से ही भाप उत्पन्न होती है उससे फिर ऊपर बादल बनते हैं। संयोगों से बादल बनते हैं और जब समय होता है तब संयोगों से यहाँ पर आते हैं। उन्हें फिर हवा खींचकर ले आती है। पंद्रह जून के आसपास पश्चिम की तरफ ज़बरदस्त हवा चलती है, वह बादलों को खींचती रहती है। खींचकर बादलों को यहाँ पर ले आती है। तब इनके जैसे लोग, जिनके पास दो सौ-तीन सौ बीघा जमीन है। वे कहेंगे, 'अब बरसात आएगी।' लेकिन काले बादल छाने के बाद भी एक घंटे में कहीं के कहीं बिखर जाते हैं! अगले दिन जब बादल जैसी कोई चीज़ ही नहीं दिखाई देती, तब इनके जैसे लोग क्या कहेंगे? 'आज तो अब बरसात आएगी ही नहीं, चलो शर्त लगाते हैं।' शर्त लगाने के लिए तैयार हो जाते हैं। इतने में तो घंटे भर में ही न जाने कहाँ से मूसलाधार आ जाती है! यह सब कुदरत है।

क्या नियति व्यवस्थित का एक पर्याय है?

प्रश्नकर्ता : मैंने अभी एक किताब में पढ़ा। उसमें जिसे आप 'व्यवस्थित' कहते हैं, वे लोग उसे 'नियति' कहते हैं। ऐसा भी कहते हैं कि, 'ऊपर भगवान जैसा कोई बाप भी नहीं है।' लेकिन वे नियति शब्द का उपयोग करते हैं। यानी नियति और व्यवस्थित...

दादाश्री : उनमें बहुत फर्क है।

प्रश्नकर्ता : लोग व्यवस्थित को नियति समझ लेते हैं।

दादाश्री : उसके लिए मैं मना करता हूँ, नियति नहीं है यह। यह जो व्यवस्थित है, वह नियति नहीं है।

प्रश्नकर्ता : व्यवस्थित और नियति इन दोनों में फर्क क्या है?

दादाश्री : बहुत फर्क है। यदि नियति है तो फिर इस शरीर पर से हमें अपना मालिकीपन उठा लेना पड़ेगा, फिर शरीर जो भी क्रिया करे, वह सारी नियति है। मालिकीपन का बिल्कुल भी

दावा किए बिना, शरीर खाए-पीए, लड़ाई करे, मारपीट करे, वह सबकुछ नियति है। जब तक मालिकीपन है तब तक ऐसा नहीं करेगा। वह नियति नहीं, वह तो व्यवस्थित है।

प्रश्नकर्ता : नियति और व्यवस्थित इन दोनों के बीच बहुत गड़बड़ हो जाती है, ठीक से समझ में नहीं आता।

दादाश्री : व्यवस्थित तो, जब सभी कॉज़ेज़ इकट्ठे होते हैं तब वह व्यवस्थित कहा जाता है। नियति तो एक ही कॉज़ है। जब ऐसे दूसरे कॉज़ेज़ इकट्ठे होते हैं तब व्यवस्थित होता है।

प्रश्नकर्ता : नियति के लिए ऐसा कहते हैं कि 'जो होना है वह होगा, सभी का निर्माण होकर ही आया है।' ठीक है! व्यवस्थित भी ऐसा ही कहता है कि, आपको चिंता नहीं करनी है कुदरत, कुदरत का काम करेगी।

दादाश्री : नहीं, यह व्यवस्थित ऐसा कहता ही नहीं है। व्यवस्थित तो क्या कहता है? होने के बाद, हो जाने के बाद 'व्यवस्थित' कहो।

प्रश्नकर्ता : हाँ, लेकिन जो हुआ है वह तो योगानुबंध से ही हुआ है न।

दादाश्री : हाँ! लेकिन व्यवस्थित यानी क्या, हो जाने के बाद कहो। जेब कटने से पहले हम 'व्यवस्थित' नहीं कह सकते। यानी कि जेब कट जाने के बाद 'व्यवस्थित' कहा जाता है। जबकि नियति क्या कहती है कि कार्य का निर्माण हो चुका है लेकिन ऐसा नहीं है। जब बाकी के ऐसे सभी संयोग इकट्ठे होते हैं तब कार्य होता है। यदि सिर्फ नियति होती तब तो फिर हो ही चुका न, खत्म ही हो गया न! 'व्यवस्थित' तो बहुत समझने जैसी चीज़ है।

प्रश्नकर्ता : यों नियति और व्यवस्थित इन दोनों के बीच क्या फर्क है? उसका विशेष खुलासा करेंगे?

दादाश्री : बहुत फर्क है। व्यवस्थित चेन्ज हो सकता है। व्यवस्थित बदलता रहता है। नियति नहीं बदलती, वह एक समान ही रहती है। नियति अर्थात् डिसाइडेड पॉलिसी, वह पॉलिसी तीनों काल में एक ही प्रकार की होती है। पॉलिसी में फर्क नहीं।

कुदरत की कितनी सुंदर व्यवस्था

प्रश्नकर्ता : नियति उत्पन्न कैसे होती है?

दादाश्री : नियति है ही, कुदरती रूप से नियति ही है। नियति तो यह प्रवाह है सारा यह... ये सभी मनुष्य प्रवाह में ही बह रहे हैं, प्रवाह में। यानी नियति के प्रवाह में है।

प्रश्नकर्ता : अब नियति जो है उसका जीव पर क्या असर होता है?

दादाश्री : वह तो काम करती ही रहती है। निरंतर उस तरफ प्रवाह में ले ही जाती है।

प्रश्नकर्ता : नियति अर्थात् प्रवाह। अब यह समझाइए कि 'प्रवाह' क्या है?

दादाश्री : गाड़ी जब चलने लगती है न, तो वह हर एक स्टेशन पर एक्ज़ेक्ट अपने टाइम पर ही पहुँचती है, ऐसा सब होता है। अत: जब मुंबई आता है तब उसे नियति कहते हैं। और यदि दखलंदाज़ी हुई तो नियति खत्म। अत: ऐसा कहते हैं कि यह गाड़ी नियति वाली है।

नियति अर्थात् क्या? तब कहेंगे, प्रवाह की तरह जैसे यह नदी बहती है न, उसी तरह बहते रहना, बहते ही रहना। यानी ये जीवमात्र बहते ही रहते हैं।

यह जगत् स्वभाव से चल रहा है। हर एक

चीज़ अपने स्वभाव में ही है और स्वभाव से बाहर कुछ भी नहीं गया है। सिर्फ यह जो व्यवहार है, यह पूरा ही समसरण मार्ग है, और इस समसरण मार्ग में ये जीव आए हुए हैं। इसके तीन भाग किए हैं। एक यह अव्यवहार-राशि, दूसरी व्यवहार-राशि और तीसरा सिद्धक्षेत्र!

अव्यवहार राशि के जीव अनंत हैं और जो व्यवहार में आए हैं, वे जीव भी अनंत हैं, लेकिन व्यवहार में इन मनुष्यों को गिनना हो तो गिने जा सकते हैं, ऐसा है। और जो व्यवहार में से मुक्त हो गए हैं, सिद्धगति वाले हैं, वे भी अनंत जीव हैं!

अव्यवहार राशि के जीव यहाँ पर व्यवहार में आते हैं। ऐसा मानो न, पचास हज़ार जीव मोक्ष में गए तो दूसरे पचास हज़ार अव्यवहार राशि में से आकर व्यवहार राशि में प्रवेश करते हैं, जिससे यह व्यवहार वैसे का वैसा ही रहता है।

व्यवहार में से जितने जीव वहाँ मोक्ष में जाते हैं, सिद्धक्षेत्र में जाते हैं, उतने जीव अव्यवहार में से व्यवहार में आते हैं। यानी कि व्यवहार किसे कहते हैं कि व्यवहार में जितने जीव हैं, उनमें से एक भी जीव कभी भी कम नहीं होता और न ही बढ़ता है, उसी का नाम व्यवहार! व्यवहार में एक भी जीव कम-ज़्यादा हो जाए न, तो पूरी व्यवस्था ही बिखर जाएगी!

प्रश्नकर्ता : या तो एक जीव कम हो जाए, या फिर एक जीव बढ़ जाए, तो क्या होगा?

दादाश्री : कुदरत की पूरी प्लानिंग ही बिखर जाएगी! यह सूर्य आज ग़ैरहाज़िर हो जाए तो कल चंद्र ग़ैरहाज़िर हो जाएगा, या फिर कितने ही तारे भी नहीं होंगे, फिर किसी दिन कोई ग्रह नहीं होगा। क्योंकि कहेंगे, 'वे तो मोक्ष में गए', तो यहाँ पर घोर अँधेरा छा जाएगा! यानी एक जीव भी कम-ज़्यादा हो जाए तो पूरा प्लानिंग ही बिखर जाएगा, लेकिन यह तो पूरा डिज़ाइन, सबकुछ एक्ज़ेक्ट रहने वाला है।

सूर्य-चंद्र-तारे अभी तो अरबों वर्ष बाद भी ऐसे के ऐसे ही दिखेंगे। वही का वही शनि ग्रह और वही का वही शुक्र ग्रह, लेकिन अंदर से जीव बदलते रहते हैं। सिर्फ पैकिंग वही की वही रहती हैं, बिंब वही रहते हैं, और अंदर वाला जीव च्यवित होकर दूसरी जगह पर जाता है। सूर्यनारायण का भी च्यवन होता है और दूसरे जीवों का भी च्यवन होता है। लेकिन वे जब च्यवन होकर जाते हैं, उसी समय दूसरा जीव वहाँ उनकी जगह पर आ जाता है। इसीका नाम 'व्यवस्थित'! यह कैसी सुंदर व्यवस्था है!! तीन बजकर तीन मिनट पर वह जीव वहाँ पर आ जाता है, उसी घड़ी पहले वाले जीव का निकलना होता है। हाँ, नहीं तो हमें पता चल जाएगा कि ऐसा 'अँधेरा' क्यों हो गया? लेकिन ऐसा कुछ होता नहीं है। यानी एक भी जीव कम-ज़्यादा नहीं होता और सभी जीव अपनी-अपनी सर्विस में ही रहेंगे!

समसरण मार्ग में कुदरती है 'जीव की प्रगति'

प्रश्नकर्ता : आप समसरण मार्ग के बारे में विस्तारपूर्वक बताइए न!

दादाश्री : संसार समसरण मार्ग है। बहुत लंबा मार्ग है। अर्थात् पिछले जन्म से आप चलते आए हो, इस जन्म में आप चल रहे हो। इस मार्ग पर आप जैसा ज्ञान देखते हो, वैसे ज्ञान पर आपको श्रद्धा बैठती है। उस श्रद्धा का रूपक आता है। अगले जन्म में अलग तरह का ज्ञान मिलता है और रूपक में पूर्व जन्म का ज्ञान आता है!

ज्ञान से जब समझ में आए न, तब जैसे-जैसे अवस्थाएँ बदलती जाती हैं वैसे-वैसे व्यवस्थित बदलता जाता है। जितना समझ में आए उतना,

जैसे-जैसे अवस्थाएँ बदलती जाती हैं वैसे-वैसे व्यवस्थित बदलता जाता है। जबकि नियति तो वही की वही, एक समान, एक ही तरह से बहती रहती है।

समसरण मार्ग अर्थात् क्या? निरंतर बहता हुआ। बहता हुआ यानी कि नियति के आधार पर बहता हुआ। और नियति में बदलाव नहीं होता, व्यवस्थित में बदलाव होता है।

जो जीव समसरण मार्ग में से होते हुए आए हैं और जिनके नाम पड़ चुके हैं, यानी जिनका नामरूप उत्पन्न हो जाए, तभी से ऐसा कहा जाएगा कि ये व्यवहार में आ गए कि 'भाई, यह तो प्याज़ है, यह तो गुलाब है, यह चावल का दाना, यह काई है।' ठेठ मोक्ष में जाने तक अवस्थाएँ निरंतर बदलती ही रहती हैं और डेवेलपमेन्ट चलता ही रहता है।

प्रश्नकर्ता : अत: जब निगोद से जीव एक इन्द्रिय में आता है, उसके बाद उसकी प्रगति किस तरह से होती है?

दादाश्री : अपने आप ही, सहज, स्वाभाविक रूप से होती ही रहती है। वह सब व्यवस्थित के नियम से होता ही रहता है। सिर्फ, यहाँ हिन्दुस्तान में आने के बाद उस व्यवस्थित को नियति ही कहते। यदि ऐसा होता कि 'व्यवस्थित' हमेशा के लिए ही 'व्यवस्थित' रहता तो उसे नियति कहा जाता। परंतु हमेशा ही व्यवस्थित नहीं रहता। यहाँ हिन्दुस्तान में आने के बाद यहीं से सभी के विचार बदलते हैं और फिर यों चार गतियों में जाते हैं इसीलिए 'व्यवस्थित' कहना पड़ा। जब सभी कारण इकट्ठे होते हैं तब 'व्यवस्थित' होता है, वर्ना वह नियति ही कही जाती।

नियति अर्थात् कुदरत अपने आप नियमानुसार ही उसे ठेठ मोक्ष में ले जाती है। कुदरती रूप से ही वह एक इन्द्रिय जीव बनता है, दो इन्द्रिय बनता है, तीन इन्द्रिय बनता है। लेकिन यहाँ हिन्दुस्तान में लोगों के लिए चार गतियाँ हैं।

प्रश्नकर्ता : क्योंकि डेवेलपमेन्ट यहाँ अधिक है।

दादाश्री : यहाँ तो उल्टी गति बाँधने में देर ही नहीं लगती न! नियत ही उल्टी गति की है न! तो, इसमें नियति क्या करे बेचारी?

प्रश्नकर्ता : यह तो, इस संसार के परिभ्रमण से हम यदि किसी भी एक आत्मा को लें, एक आत्मा निगोद में से निकला तो वह क्या लेकर निकला? और जब वह निकला तब तो अपना सबकुछ लेकर ही निकला है, शुरू से ही उसका सबकुछ पक्का ही है, निश्चित?

दादाश्री : नहीं! वह पक्का नहीं होता। यदि पक्का होता तब तो उसे नियति कहते। निगोद में से निकलने के बाद जीवों को आगे ले जाने वाली शक्ति नियति हैं। उसी की वजह से यह प्रवहन होता रहता है। नाम मिला तभी से व्यवहार राशि में आता है। यानी व्यवहार राशि में से धीरे, धीरे, धीरे प्रगति करता-करता... वह भी नियति ही करवाती है, नियति ही काम करती है। लेकिन सिर्फ, यहाँ मनुष्य में आने के बाद ही अहंकार उत्पन्न होता है।

प्रश्नकर्ता : यानी जब निगोद में से निकलता है तब क्या होता है? कुछ नहीं होता?

दादाश्री : कुछ भी नहीं। अहंकार-वहंकार कुछ भी नहीं होता। ये सब जो गुलाब हैं, आलू हैं, फिर दो इन्द्रिय, तीन इन्द्रिय इस प्रकार होते-होते सभी जीव डेवेलप होते हैं।

प्रश्नकर्ता : क्या वे सभी शुद्धात्मा हैं?

दादाश्री : वे शुद्धात्मा ही हैं। शुद्ध है, परंतु

गुलाब को खुद को भान नहीं है लेकिन आगे प्रगति करने के लिए गुलाब को, खुद को कोई पुरुषार्थ नहीं करना पड़ता। वह अपने आप आगे बढ़ता ही रहता है। वह नियति ही उसे आगे बढ़ाती है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन निगोद में से निकलने का मन क्यों हुआ?

दादाश्री : मन हो जाए, ऐसा कुछ था ही नहीं। मन तो था ही नहीं वहाँ पर। मन तो, यहाँ मनुष्य में आया तभी मन हुआ। ये दूसरे जो पाँच इन्द्रियों वाले (जीव) में आए न, यानी मनुष्य के अलावा बाकी के जो पाँच इन्द्रिय वाले जीव हैं, उनका मन लिमिटेड है जबकि मनुष्यों का मन अन्लिमिटेड है। और मन है इसलिए दूसरे कर्म इकट्ठे हो गए। वे भी फिर जिसे जैसे-जैसे संयोग मिलते गए वैसे। यदि विपरीत संयोग मिले, यानी यदि कुसंग मिले तो उल्टा चलता है तो नर्कगति में जाता है। सत्संग मिले तो सीधा चलता है तो देव गति में जाता है। मनुष्य में आने के बाद ऐसा अहंकार उत्पन्न होता है कि वह नर्कगति में भी जाकर आ जाए। खुद की स्वतंत्रता उत्पन्न होने के बाद सातों नर्क भुगत आए। जबकि नियति में स्वतंत्रता नहीं होती, खुद को कोई भी कर्म करने का स्वतंत्र राइट (अधिकार) नहीं होता।

नियति कुदरती प्रवाह है। ये जीवमात्र निरंतर प्रवाह में ही हैं, उनमें परिवर्तन होता ही रहता है और उसमें यदि बीच में दखल नहीं हुआ होता न, तो वह (प्रवाह) सीधा मोक्ष में ले जाता। लेकिन यह तो, बहते हुए प्रवाह में खुद ने दखल दिया।

प्रश्नकर्ता : वह दखलंदाज़ी करने की सत्ता किसकी है?

दादाश्री : अहंकार की।

प्रश्नकर्ता : लेकिन नियति में दखल देने का उसका मन क्यों हुआ?

दादाश्री : यह सब देखकर। लोगों को दखल देते देखा इसलिए फिर उसे भी लगा 'मैं भी ऐसा करूँ'।

लोकसंज्ञा से फँस गया अहंकार

प्रश्नकर्ता : जो जीव व्यवहार राशि में आया, वह फिर मोक्ष में जाएगा ही? तो उसका समय भी तय ही होगा न कि इस समय पर जन्म लेगा और फिर मोक्ष में जाएगा? मोक्ष में जाने की समय मर्यादा तय होगी?

दादाश्री : जब से जीव व्यवहार राशि में आता है न, तभी से मोक्ष में जाने की तैयारी हो गई।

प्रश्नकर्ता : लेकिन उसका समय तय होगा न?

दादाश्री : समय तय ज़रूर है, लेकिन मनुष्य में आने के बाद यदि अहंकार नहीं करे तो समय तय है। अहंकार करे तो वहाँ से वापस गिरता है, फिर ठिकाना नहीं। अहंकार में उल्टा चला, तो फिर ठिकाना नहीं है, कितने ही जन्मों तक भटकता है फिर तो! इसलिए यदि अहंकार नहीं करे तो समय निश्चित है। इन जानवरों की तरह रहे न, जिस तरह जानवर रहते हैं उस तरह से सबके साथ रहे न, यानी कि मान-तान, अहंकार का झंझट नहीं, लोभ का झंझट नहीं, तो सीधे मोक्ष में चला जाएगा। लेकिन ये लोग जानवर की तरह रहते नहीं हैं न!

प्रश्नकर्ता : मनुष्य में आने के बाद जानवर की तरह किस तरह से रह पाएँगे?

दादाश्री : मेरा कहना यह है कि ये जानवर जिस तरह से रहते हैं न, उस तरह से जीवन

जीए तो मोक्ष में चला जाए। लेकिन इन दूसरे लोगों का देखकर, वह भी वैसा ही बन जाता है। 'इसने ऐसा किया और मैं ऐसा हूँ' उसका ऐसा सब अहंकार है, कि 'मैं यह कर लूँ और मैं वह कर लूँ'! फिर ऐसे करते-करते सब बिगड़ जाता है!

यानी यह जगत तो ऐसे का ऐसा ही रहेगा, हमेशा के लिए ऐसा ही रहेगा। उसमें से नियम से मोक्ष में जाते रहेंगे!

'डेवेलपमेन्ट' के लिए कुदरत के नियम

प्रश्नकर्ता : परंतु आगे बढ़ने के लिए अहंकार की ज़रूरत तो है न?

दादाश्री : वह अहंकार तो अपने आप रहता ही है। अहंकार अपने रखने से नहीं रहता। आकर घुस ही जाता है!

प्रश्नकर्ता : मनोविज्ञान में ऐसा लिखा है कि 'डेवेलपमेन्ट' के लिए थोड़े-बहुत अहंकार की ज़रूरत है, वह ठीक है?

दादाश्री : वह तो कुदरती होता ही है। 'डेवेलपमेन्ट' के लिए कुदरत का नियम ही है कि अहंकार खड़ा होता है और खुद 'डेवेलप' होता जाता है। ऐसे करते-करते जब 'डेवेलपमेन्ट' पूरा होने लगता है, तब हिन्दुस्तान में आता है। उसके बाद उस 'डेवेलपमेन्ट' की बहुत ज़रूरत नहीं रहती। उसे मोक्ष का मार्ग मिल जाएगा।

प्रश्नकर्ता : यानी फिर जीव को कुछ करने जैसा है या नहीं?

दादाश्री : कुछ करने जैसा ही नहीं था लेकिन इस बुद्धि के उत्पन्न होने से तो अहंकार उत्पन्न होता है। यह जो अहंकार उत्पन्न होता है, वह दखल देता है। यदि बुद्धि का उपयोग न हो तो, कल्याण हो जाएगा लेकिन बुद्धि का उपयोग किए बगैर रहता नहीं है न! क्योंकि, वह तो बुद्धि है। मेरे जैसे की बुद्धि चली गई, उसके बाद कोई परेशानी नहीं आती। यानी प्रवाह में आ ही गया। प्रवाह यानी उदय कर्म के अधीन। सिर्फ उदय कर्म के अधीन ही रहे न तो, उसे कहेंगे कि, 'प्रवाह में है।' वह सीधा मोक्ष में जाएगा। लेकिन उदय कर्म के अधीन रहता नहीं है न, खुद उसमें छेड़छाड़ करता रहता है। वह जो प्रवाह है वह नियति का है, यानी कि मेरी बुद्धि चली गई है तो अब मुझे मोक्ष में नहीं जाना हो तब भी जाना पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : यानी नियति उसे आगे ही ले जाती है या नीचे भी गिरा देती है?

दादाश्री : नहीं, नियति नीचे नहीं गिराती। वह तो अहंकार का दखल है सारा। नियति तो आगे ही ले जाती है।

प्रश्नकर्ता : यानी नियति अर्थात् कर्म की निर्जरा न?

दादाश्री : नहीं! नियति तो उसे आगे ले जाती है, इतना ही। वह कर्म करवाती है और भुगतने लगाती है, वह निर्जरा भी करवाती है लेकिन यदि अपना दखल नहीं हो, तो। यह तो, अपना तो पक्का दखल रहता ही है, 'मैंने कमाया'। इस वर्ल्ड में क्या किसी ने कमाया है? इस दुनिया में किसी में संडास जाने की शक्ति है? वह दखल किया।

नियति ही सारा काम कर रही है। सुबह जो उठाती है वह नियति, सुलाती है वह भी नियति, सबकुछ नियति ही कर रही है।

नियति में नहीं है पुरुषार्थ

प्रश्नकर्ता : क्या पुरुषार्थ नियति द्वारा निश्चित हो ही चुका है?

दादाश्री : नियति द्वारा निश्चित हो चुका

पुरुषार्थ तो है ही। उसकी कोई भूल नहीं है लेकिन फिर वह नियति क्या है, उसे एक्ज़ेक्ट समझना पड़ेगा। नियति शब्द बोलने से ऐसा नहीं कह सकते कि समझ में आ गया। 'नियति क्या है', वह समझना चाहिए।

जीव निरंतर मोक्ष की तरफ जा ही रहे हैं। उसमें नियति द्वारा पुरुषार्थ निश्चित हो चुका है, इस बात में तो कोई भूल नहीं है लेकिन मनुष्य में उलटा पुरुषार्थ करने की शक्ति है ही। मनुष्य जन्म में जो अहंकार है न, यदि उस अहंकार का बीच में दखल नहीं होता फिर तो कोई हर्ज ही नहीं था। लेकिन जो इगोइज़म है न, वह नियति को भी बदल देता है। मनुष्य के अलावा बाकी सभी नियति में ही हैं। सिर्फ मनुष्यों के लिए नियति में पुरुषार्थ नहीं है।

प्रश्नकर्ता : आप ऐसा कहना चाहते हैं कि नियति द्वारा मनुष्यों में पुरुषार्थ निश्चित नहीं हुआ है?

दादाश्री : निश्चित हो गया है। लेकिन खुद अहंकारी है न, इसलिए फिर इगोइज़म करता है। इगोइज़म नियति के विरुद्ध में है। नियति में इगोइज़म का होना संभव नहीं है। यह इगोइज़म करता है, ऐसा आपने कहीं देखा है?

प्रश्नकर्ता : अहम् तो सभी जगह व्याप्त है ही न!

दादाश्री : नहीं! वह सिर्फ मनुष्यों में ही है। दूसरी जगह अहम् नहीं है। दूसरी जगह जो अहम् दिखाई देता है, वह डिस्चार्ज अहम् है जबकि यहाँ तो, चार्ज और डिस्चार्ज दोनों प्रकार के अहंकार दिखाई देते हैं। यहाँ पर मनुष्य कर्म बाँध सकता है, वह चार्ज अहंकार है। और उसका जो फल भुगतना पड़ता है, वह डिस्चार्ज अहंकार है। और मनुष्य के अलावा बाकी अन्य योनियों में डिस्चार्ज अहंकार है। यहाँ पर चार्ज और डिस्चार्ज दोनों प्रकार के अहंकार हैं। यदि वे दोनों प्रकार के अहंकार खत्म हो जाएँ तो मुक्ति हो जाएगी।

प्रश्नकर्ता : यदि अहम् को निकाल दिया जाए तो बदल सकता है, ऐसा अर्थ हुआ न?

दादाश्री : हाँ! अहम् को यदि निकाल दे तो बदल सकता है। सबकुछ बदल सकता है।

प्रश्नकर्ता : अहम् क्या इस प्रकार से निश्चित हो चुका है या फिर अहम् भी उसके अपने टाइम पर ही जाता है?

दादाश्री : नहीं, ऐसा नहीं है। उसे यदि संयोग मिल जाए, 'साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स', जैसे कि आप मुझसे मिल गए, तो मैं आपका अहंकार दूर कर दूँ एक ही घंटे में, यानी कि संयोगानुसार है। यदि संयोग मिल जाए तो काम हो जाता है। उसका पुरुषार्थ... पुरुष होने के बाद रियल पुरुषार्थ उत्पन्न होता है। यदि इगोइज़म चला जाए तो कुछ हद तक का इगोइज़म चला जाता है, जो इगोइज़म किसी को ऑबस्ट्रक्ट (अवरोध) करता है, ऐसा इगोइज़म जब चला जाए तब रियल पुरुषार्थ शुरू हो जाता है।

सभी संयोग ही उससे करवाते हैं। खुद के हाथों में सत्ता नहीं है, फिर भी खुद कहता है कि, 'मैं करता हूँ'। अब यदि 'मैं पन' नहीं होता तो कर्ताभाव नहीं होता। 'मैं करता हूँ', ऐसा भान, ऐसा अहंकार यदि नहीं होता तो नियति मोक्ष में ले जाती।

जीवों का ऊर्ध्वगमन, कुदरती संचालन

प्रश्नकर्ता : जीव कौन से पुरुषार्थ से आगे बढ़ा है?

दादाश्री : वह आपको समझाऊँ। अपने यहाँ जो नर्मदा नदी है, वह पत्थर के टीले पर से होकर भी बहती है और मिट्टी के टीले पर से होकर भी बहती है। जहाँ पत्थर का टीला हो वहाँ पानी बहुत ज़ोर से बहता है और पत्थरों को भी तोड़ देता है। फिर नदी में कोई इतना बड़ा पत्थर गिरता है, कोई इतना बड़ा पत्थर गिरता है। उस समय के पत्थर का कोना यदि लगे न, तो खून निकल जाए, ऐसा होता है। क्योंकि ताज़ा टूटकर गिरे हुए पत्थर धार वाले होते हैं। इन जीवों का पुरुषार्थ क्या है, वह मैं आपको समझाऊँ। इस नदी का स्वभाव कैसा है कि वह पत्थरों को बहाव में ऐसे खींचकर वैसे खींचकर ले जाती है। ऐसे चलता ही रहता है। वे पत्थर फिर अंदर ही अंदर टकराते रहते हैं, टकराते रहते हैं। इसलिए दस-पंद्रह मील तक बहने के बाद मुलायम लगते हैं, चिकने लगते हैं, घिसकर तैयार किए हों, वैसे मार्बल जैसे लगते हैं। पर फिर भी वे टेढ़े-मेढ़े होते हैं। फिर यहाँ भाडभूज (गाँव का नाम) तक आते-आते ऐसे गोल हो जाते हैं कि उन्हें वहाँ पर यात्रा में क्या कहते हैं? 'भाई, घर पर दर्शन करने के लिए शालिग्राम लेते आना।' वे गोल हो चुके पत्थर होते हैं, उनके लोग दर्शन करते हैं। उसी तरह से ये जीव-मात्र घिसते ही रहते हैं। कुदरत घसीटती है और टकराता है, टकराते-टकराते गोल हो जाता है!

प्रश्नकर्ता : तो फिर कुछ भी नहीं करना है?

दादाश्री : कुछ भी नहीं करना है। वह लट्टू क्या करता है? संडास जाने की सत्ता नहीं, वहाँ वह क्या करेगा? जो पत्थर टकराते-टकराते गोल हो जाते हैं, लोग उन्हें शालिग्राम कहकर मंदिर में रखते हैं। जितने शालिग्राम हो चुके उतने पूजा में बैठे और दूसरे समुद्र में गए! तो वैसा यहाँ पर हिन्दुस्तान में जन्म लेने के बाद पत्थर गोल हो चुका होता है और यदि 'ज्ञानी पुरुष' मिल गए और समकित हो गया तो वे पूजे गए और बाकी सब गए समुद्र में! समकित हुए बिना कोई पुरुषार्थ नहीं है। समकित होने तक सारी ही *सकाम निर्जरा* (नए कर्म का बंधन होकर पुराने कर्म का अस्त होना) है। ये लोग मानते हैं, वह पुरुषार्थ तो भ्रांति का है। भ्रांति का पुरुषार्थ अर्थात् फिर से जन्म लेना पड़े, वैसा।

यह आपको जो मार्ग बताया कि कहाँ से पत्थर गिरते हैं, वह व्यवहार की आदि है। अव्यवहार की आदि ही नहीं, वह तो अनादि है। परंतु व्यवहार की आदि यहाँ से होती है। पत्थर नदी में गिरे तब से। अव्यवहार राशि यानी जहाँ अभी तक जीव का नाम भी नहीं पड़ा है, वह। और जहाँ से नाम पड़ा कि यह गुलाब, यह मोगरा, ये चींटी, मकोड़े... वे सब जीव व्यवहार राशि में आए। कुदरती रूप से धक्के खा-खाकर आगे आते हैं। ठेठ अनाज की बाली आने तक कुदरती संचालन है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर इस 'रिलेटिव' प्रगति का आधार क्या है?

दादाश्री : सबकुछ ही कुदरत करवाती है। जैसे-जैसे काल बदले, वैसे ही द्रव्य बदलता है, द्रव्य बदले वैसे-वैसे भाव बदलते हैं और खुद इगोइज़म करता है, 'मैंने किया!' यह 'इगोइज़म' भी कुदरत करवाती है। और जो इस इगोइज़म में से छूट गया वह इसमें से छूट गया। यह प्रगति कुदरत करवाती है, वर्ना जितने शब्दप्रयोग हैं वे सभी 'इगोइज़म' है।

अहंकार के दखल से दुःख मोल लिए

रात को हाँडवा पेट में डालकर सो जाता है न? फिर गरड़-गरड़ खर्राटें लेता है! घनचक्कर, अंदर पता लगा न, क्या चल रहा है? तब कहे

कि, 'उसमें मी काय करूँ?' और कुदरत का कैसा है? पेट में पाचक रस, 'बाइल' पड़ता है, दूसरी चीज़ें पड़ती है, सुबह 'ब्लड' 'ब्लड' की जगह, 'यूरिन' 'यूरिन' की जगह, 'संडास' 'संडास' के स्थान पर पहुँच जाता है। कैसी, पद्धति अनुसार सुंदर व्यवस्था की हुई है! कुदरत अंदर कितना बड़ा काम करती है! यदि डॉक्टर को एक दिन यह अंदर का पचाने का काम सौंपा हो तो वह मनुष्य को मार डाले! अंदर में पाचक रस डालना, 'बाइल' डालना, आदि डॉक्टर को सौंपा हो तो डॉक्टर क्या करेगा? भूख नहीं लगती इसलिए आज ज़रा पाचक रस ज़्यादा डालने दो। अब कुदरत का नियम कैसा है कि पाचक रस ठेठ मरते दम तक चलें, उस अनुसार डालती है। अब ये उस दिन, रविवार के दिन पाचकरस ज़्यादा डाल देता है इसलिए फिर बुधवार को अंदर बिल्कुल पचेगा ही नहीं, क्योंकि बुधवार के हिस्से का भी रविवार को डाल दिया।

कुदरत के हाथ में कितनी अच्छी बाज़ी है! और एक आपके हाथ में व्यापार आया, और उसमें भी व्यापार आपके हाथ में तो है ही नहीं। आप सिर्फ मान बैठे हो कि मैं व्यापार करता हूँ, इसलिए झूठी हाय-हाय, हाय-हाय करते हो। दादर से सेन्ट्रल टेक्सी में जाना हुआ, तब वह मन में टकरा जाएगी-टकरा जाएगी करके डर जाता है। अरे! कोई बाप भी टकराने वाला नहीं है। तू अपनी तरह से आगे देखकर चल। तेरा फ़र्ज़ कितना? तुझे आगे देखकर चलना है, इतना ही। वास्तव में तो वह भी तेरा फ़र्ज़ नहीं है। कुदरत तेरे पास से वह भी करवाती है। लेकिन आगे देखता नहीं है और दख़ल करता है। कुदरत तो इतनी अच्छी है! यह अंदर इतना बड़ा कारखाना चलता है तो बाहर नहीं चलेगा? बाहर तो कुछ चलाने को है ही नहीं। क्या चलाना है?

प्रश्नकर्ता : कोई जीव उल्टा करे, तो वह भी उसके हाथ में सत्ता नहीं है?

दादाश्री : ना, सत्ता नहीं है, लेकिन उल्टा हो वैसा भी नहीं है, लेकिन उसने उल्टे-सुल्टे भाव किए इसलिए यह उल्टा हो गया। खुद ने कुदरत के इस संचालन में दख़ल दी है, नहीं तो ये कौए, कुत्ते ये जानवर कैसे हैं? अस्पताल नहीं चाहिए, कोर्ट नहीं चाहिए, वे लोग झगड़े कैसे सुलझा देते हैं? दो साँड लड़ते हैं, बहुत लड़ते हैं, लेकिन अलग होने के बाद वे क्या कोर्ट ढूँढने जाते हैं? दूसरे दिन देखें तो आराम से दोनों घूम रहे होते हैं! और इन मूर्खों के कोर्ट होते हैं, अस्पताल होते हैं, तब भी वे दु:खी, दु:खी और दु:खी! ये लोग रोज़ अपना रोना रोते हैं, इन्हें अकर्मी कहें या सकर्मी कहें? ये चिड़िया, कबूतर, कुत्ते सब कितने सुंदर दिखते हैं! वे क्या सर्दी में *वसाणुं* (जड़ी-बूटी डालकर बनाई गई मिठाई) खाते होंगे? और ये मूर्ख वसाणुं खाकर भी सुंदर नहीं दिखते, बदसूरत दिखते हैं। इस अहंकार के कारण सुंदर व्यक्ति भी बदसूरत दिखता है। इसीलिए कोई भूल रह जाती है, ऐसा विचार नहीं करना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : हमारी सभी शक्तियों पर आवरण आने का मुख्य कारण अहंकार ही है?

दादाश्री : अहंकार की वजह से ही सभी शक्तियाँ व्यर्थ खर्च हो गई हैं न! वह हमेशा अंधा ही होता है। अब, फिर अहंकार के भाग करें, उसके डिविज़न करें कि भाई, यह अहंकार तो किस विषय में? इसे लोभ में अहंकार ज़्यादा है, इसे मान में अहंकार ज़्यादा है, इस तरह के सारे अहंकार। अत: यह अहंकार ही रोकता है, यह सारी झंझट ही अहंकार की है। इस अहंकार को शून्य करने की ज़रूरत है।

कुदरत का नियम ऐसा है कि जहाँ पर

अहंकार जितना कम है, वहाँ उतनी ही सरलता से प्राप्त हो जाता है। बालक सरल है इसलिए उसे जितना चाहिए उतना मिल ही जाता है न! अहंकार की वजह से भगवान से भेद हो जाता है। जितना अहंकार खत्म होगा, उतना ही अभेद बनेगा। कुदरत का नियम है कि जहाँ 'मैं कुछ हूँ' ऐसा हुआ कि भगवान से अलग हो गया।

मनुष्य अहंकार करते हैं और कुदरत उन्हें मार-मारकर गिरा देती है। कुदरत कहती है, 'कर रही हूँ मैं फिर तू क्यों अहंकार कर रहा है?'

सर्जन अहंकार का, विसर्जन कुदरत का

प्रश्नकर्ता : 'अहंकार कर्म बाँधता है और कुदरत उसे छुड़वाती है' इसे समझाइए।

दादाश्री : पुद्गल भी कर्म नहीं करता और आत्मा भी नहीं करता। यदि पुद्गल कर्म कर रहा होता तो ज्ञानी पुरुष का पुद्गल भी कर्म कर पाता और यदि आत्मा कर्म कर रहा होता तो उनमें भी आत्मा है लेकिन वह कर्म नहीं करता। अहंकार कर्म करता है। जब तक अहंकार है तब तक कर्म बंधन होगा। अहंकार चला जाएगा तो कर्म का कर्ता चला जाएगा यानी कि कर्म चले जाएँगे। कर्म बाँधने के बाद कुदरत, 'व्यवस्थित शक्ति' उसे छुड़वाती है। तू खाता तो है लेकिन विसर्जन? विसर्जन व्यवस्थित के हाथों में है। तूने यदि खराब खाया तो अंत में दस्त द्वारा भी निकालना ही पड़ता है न? क्या व्यवस्थित के पास और कोई चारा है?

'व्यवस्थित' अर्थात् कोई छपी हुई चीज़ नहीं है। आपके जैसे परिणाम हैं वैसा ही 'व्यवस्थित' सेट हुआ होता है। 'व्यवस्थित' अपने खुद के परिणाम पर आधारित है। अपने खुद के परिणाम का यों सीधा बदला नहीं मिलता लेकिन वे 'कुदरत' में जाते हैं और उसमें दूसरे संयोग मिलते हैं और कुदरत के सम्मिलित होने से जो प्रमाण सर्जित होते हैं, जो रंग-रूप बनते हैं, वैसा ही रूपक आता है।

कुदरत वह अपना ही फोटो है। कुदरत टेढ़ी नहीं है, आप टेढ़े हो!

सर्जन करना, वह 'आपकी' सत्ता में है। विसर्जन करना, वह 'कुदरत' की सत्ता में हैं। अतः सर्जन करना हो तो सीधा करना। 'आपके' द्वारा जो सर्जन किया हुआ है, कुदरत उसे विसर्जन किए बगैर रहेगी ही नहीं!

पूरा जगत् जो भी कुछ कर रहा है, वह सारा कुदरती विसर्जन ही हैं। फिर भले ही जप करो या तप करो, सभी कुदरती विसर्जन हैं। जो फूल चढ़ाते हैं, उनका उपकार कैसा? और जेब काटे, उसका अपकार कैसा? सर्जन में खुद निमित्त होता है और विसर्जन तो कुदरत ही करती है। यह वीतरागों की अंतिम दृष्टि है!

प्रश्नकर्ता : ऐसा कहा जाता है कि 'कुदरत कभी भी परफेक्ट नहीं, इम्परफेक्ट (अपरिपूर्ण) है'।

दादाश्री : कुदरत परफेक्ट है इसलिए निरंतर चेन्ज होती रहती है। यदि इम्परफेक्ट होती न तो चेन्ज नहीं होती। जीवमात्र को शांति में रखने के लिए और उन्हें डेवेलप करने के लिए नेचर निरंतर चेन्ज होती ही रहती है। नेचर यदि ज़रा सी भी रुक जाए न, तो वह नेचर डेवेलप्ड नहीं है। वह जरा भी रुकी नहीं है, ज़रा भी रुकेगी नहीं, उसमें निरंतर परिवर्तन होता ही रहता है। नेचर तो इतनी अधिक परफेक्ट है कि यदि अफ्रिका के जंगलों में मूसलाधार बारिश हो रही हो और इन्डिया में भी बरसात होती हो लेकिन तीसरे साल अकाल

पड़े बगैर नहीं रहता। क्योंकि जहाँ पर इगोइज़म वाले लोग हैं वहाँ पर नेचर उनका कंट्रोल इस तरह से रखती है कि इन लोगों के यहाँ यदि दस साल तक बहुत अच्छी बरसात हो न, अच्छी फसल हो तो, वे लोग छूरी लेकर मार डालें लोगों को। अतः कुदरत इन्हें ठिकाने ही रखती है। इगोइज़म वालों को मार ठोककर ठिकाने ही रखती है और जिन लोगों में इगोइज़म नहीं बढ़ा है और डेवेलप नहीं हुआ है, उनके वहाँ, उन अफ्रिका के जंगलों में बहुत बरसात होती है। यानी कि यह कुदरत परफेक्ट है। कुदरत भगवान का ही काम कर रही है। लेकिन उस कुदरत को हम कर्ता नहीं रखते और इगोइज़म कर देते हैं। यदि इगोइज़म बीच में न हो तो, कुदरत बहुत सुंदर है, अहंकार के कारण दिक्कत है।

जितना अहंकार उतना अंधापन

अहंकार और अंधा, दोनों एक सरीखे कहे जाते हैं। जिसका जिस बात में अहंकार ज़्यादा होता है, उस बारे में उसे अंधापन ज़्यादा रहता है।

जितना अहंकार उतना ही अंधापन है। जितना अंधापन उतना ही अहंकार है। इस अहंकार के चार भाग हैं, क्रोध-मान-माया व लोभ। जब लोभ में पड़े, पैसों में पड़े तो, लोभांध हो जाता है। मान में पड़े तो मानांध हो जाता है। क्रोध में पड़े तब क्रोधांध हो जाता है। सभी में अंधापन होता है। चाहे किसी में भी हो, लेकिन अहंकार ही अंधापन है। अहंकार, वह भ्रांति से उत्पन्न हुई चीज़ है।

अहंकार अंधा होता है इसलिए सब उल्टा-सुल्टा करता है। वह स्वभाव से ही अंधा है, बुद्धि की आँखों से थोड़ा बहुत देखता है और बुद्धि की सलाह से चलता है। बुद्धि जहाँ कहे वहाँ वह हस्ताक्षर कर देता है। बुद्धि प्रधानमंत्री और वह प्रेसिडेन्ट। बाकी, यों खुद तो अंधा है, उसे कुछ भी दिखाई नहीं देता। जब बुद्धि कहती है कि भाई, 'इस प्रकार कर दो' तब हस्ताक्षर कर देता है। लेकिन, 'मैं करता हूँ', ऐसा अहंकार है। हाँ, बस 'मैं'पन का! वह 'मैं' पद कहा जाता है। बाकी, अहंकार विलय हो जाने के बाद ही खुद का हित होता है, हित समझ में आता है। वर्ना जब तक अहंकार है तब तक खुद अंधा है।

अहंकार पागलपन ही करता है, नुकसान करता है। उसी को अहंकार कहते हैं। खुद अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारता रहे, उसे अहंकार कहते हैं। अहंकार अंधेरे में है। वह तरह-तरह की मार खाता ही रहता है।

ठोकरें अहंकार को ठिकाने रखती है

कुदरत का खुराक अहंकार है। अहंकार ही कुदरत का खुराक है। अहंकारी को अपमान का भय नहीं लगता। मानी को अपमान का भय रहता है। जो बहुत अहंकार की *घेमराजी* (खुद के सामने दूसरों को तुच्छ समझना) में घूमता है उसे कुदरत खत्म कर देती है। कुदरत ही उसे मार मारती है।

ये कुदरत के नियम अलग प्रकार के हैं। ऊर्ध्वगति में ले जाना हो उसके नियम अलग और अधोगति में घसीटकर ले जाने के नियम अलग।

ऐसा है न, यह कलियुग है, इसमें जो इच्छाएँ होती हैं, यदि उनकी प्राप्ति हो जाए तो अपना अहंकार बढ़ जाएगा और फिर गाड़ी उल्टी चलेगी। इसलिए इस कलियुग में तो हमेशा उसे ठोकर लगे न, तभी अच्छा है। यानी हर एक युग में यह वाक्य अलग-अलग प्रकार से होता है। अतः इस युग के संदर्भ में यह वाक्य इस तरह

कहा जाएगा। अभी यदि इच्छा के अनुसार मिल जाएगा तो उसका अहंकार बढ़ जाएगा। मिलता है सब पुण्य के हिसाब से और बढ़ता है क्या? अहंकार, 'मैं हूँ।' अत: ये जितनी भी इच्छाएँ होती हैं न, यदि उस अनुसार नहीं होगा तब उसका अहंकार ठिकाने रहेगा और बात को समझने लगेगा। जब ठोकरें लगेंगी, तब समझ में आता है। नहीं तो समझ में आता ही नहीं न! इच्छा हो और मिल जाए, उसी से तो ये लोग चढ़ बैठे हैं। इच्छा के अनुसार मिला तभी तो यह दशा हो गई बेचारों की! जो पुण्य था वह तो खर्च हो गया और बल्कि फँस गया और अहंकार पागल हो गया! अहंकार को बढ़ते देर नहीं लगती। फल कौन देता है? पुण्य देता है, जबकि मन में क्या समझता है कि 'मैं ही कर रहा हूँ।' ऐसे अहंकारी को तो मार पड़े, वही अच्छा है। ठोकरें खा-खाकर उसे जो प्राप्ति होगी, उसी में फायदा है।

कुदरत का नियम ऐसा है कि इच्छा हो और वस्तु मिले तब वे फिसल रहे हैं, अधोगति में जा रहे हैं। और इच्छा हो तो वस्तु का ठिकाना नहीं पड़ता और ठिकाना पड़े तब वस्तु की इच्छा नहीं रहती, वह ऊर्ध्वगति में ले जाने वाला कहलाता है। अच्छा है वह।

प्रश्नकर्ता : बहुत लोगों को तो इच्छा होने के साथ ही चीज़ हाज़िर हो जाती है, वह क्या कहलाता है?

दादाश्री : इच्छा तुरंत पूरी हो जाए तो फिर वह ऐसे रंग में चढ़ता है, ऐसे रंग में चढ़ता है कि फिर मार खा-खाकर मर जाता है और अधोगति में जाता है। क्योंकि मन का स्वभाव कैसा है कि एक बार कूदने की जगह मिली तो वह उछलकूद करके रख देता है!

इच्छा होते ही तुरंत मिल जाए तो घर में अकड़कर रहता है, पिता को भी कुछ नहीं मानता और न ही किसी और को मानता है। अत: यदि इच्छा होते ही मिल जाए तो समझना कि अधोगति में जाएगा। उसका दिमाग़ बढ़ते-बढ़ते घनचक्कर जैसा हो जाता है।

कुदरत ने कितना सुंदर प्रबंध किया है! जिसे ऊर्ध्वगति में जाना है उसके लिए सबकुछ ही इच्छा के अनुसार सब पूर्ति कर देती है, परंतु उस इच्छा के खत्म हो जाने के बाद। और अधोगति में जाना है उसे तुरन्त ही चीज़ें दे देती है। इसलिए कुदरत की इस बात को समझो।

सत्ता देने के कुदरती नियम

कुदरत का कैसा है? किंचित्मात्र भी किसी जीव का मनचाहा नहीं होने देती। लेकिन जिसके मन से, वाणी से या वर्तन से किसी को भी दु:ख नहीं होता, उसे कुदरत मनचाहा करने की पूरी सत्ता दे देती है।

इतनी करुणाजनक लाइफ है और इसमें ऐसे अहंकार करने जाते हैं, पागलपन करते हैं, बहरापन आ जाए तो? या फिर आँखें कमज़ोर हो जाएँ तो? अहंकार किस आधार पर? जो अहंकार को आधार दे सकें, ऐसे लोगों में अहंकार नहीं होता। जो अहंकार को आधार देने योग्य नहीं होते, वहीं पर सारा अहंकार है! जिनके पास दुनिया में कुछ होता है उनमें अहंकार होता ही नहीं है। तब दशा प्राप्त होती है।

जब तू स्कूल में पढ़ता था तब अहंकार कहाँ गया था, कि अभी वह अहंकार जागा है? 'सर' कुर्सी पर बैठते थे और हम नीचे बैठते थे। उस समय अहंकार क्यों नहीं चढ़ा? यह तो कुछ सत्ता वगैरह हाथ में आती है न, तो चहका! और कुदरत का नियम ऐसा है कि यदि सत्ता का दुरुपयोग किया तो सत्ता चली जाएगी। जो सत्ता

आपको प्राप्त हुई है उस सत्ता का यदि आप दुरुपयोग करोगे तो वह चली जाएगी। मैं जो इस ज्ञानी के पद पर बैठा हूँ और यदि मैं उसका दुरुपयोग करूँ तो मेरा यह पद चला जाएगा, अपने आप। यदि दुरुपयोग नहीं करूँ और दूसरी तरह से सिद्धियाँ भुनाऊँ, तब वहाँ कुदरत में पकड़ा जाऊँगा। सिद्धियाँ होती हैं क्या?

प्रश्नकर्ता : होती हैं।

दादाश्री : यदि उसका दुरुपयोग करे तो क्या होगा? पद चला जाएगा। किसी भी चीज़ का दुरुपयोग करोगे तो, उस पद को खो दोगे।

छुटकारा पाने के लिए मार खा लो

यह कुदरत क्षण भर भी न्याय से बाहर नहीं बरती है। यदि कुदरत क्षण भर भी न्याय से बाहर बरते तो वह कुदरत, कुदरत नहीं है।

इस जगत् का नियम क्या है? कि शक्तिशाली अशक्त को मारता है। कुदरत तो किसे शक्तिशाली बनाती है कि पाप कम किए हों, उसे शक्तिशाली बनाती है और पाप अधिक किए हों, उसे अशक्त बनाती है।

कुदरत क्या कहती है? कि तुम्हारे साथ अन्याय हुआ वह भी न्याय है और जो न्याय हुआ वह भी न्याय ही है। अतः तू संकल्प-विकल्प मत करना। वर्ना रो-रोकर भी न्याय मानना पड़ेगा, इसके बजाय तो 'व्यवस्थित' है ऐसा कह दे न, तो समाधान हो जाएगा।

यदि आपको छुटकारा पाना हो तो एक बार मार खा लो। मैंने ज़िंदगीभर ऐसा ही किया है। उसके बाद फिर मैंने सार निकाल लिया कि मेरे लिए किसी भी प्रकार की मार नहीं रही, भय भी नहीं रहा। पूरा 'वर्ल्ड' क्या है, मैंने उसका सार निकाल लिया है। मुझे खुद को तो सार मिल गया है, परंतु अब लोगों को भी सार निकालकर देता हूँ।

यानी कभी न कभी तो इस लाइन पर आना ही पड़ेगा न? नियम किसी को नहीं छोड़ता है। (इसलिए) गुनाह मात्र बंद कर दो। ज़रा सा गुनाह किया कि चार पैरों वाले बनकर भोगना पड़ेगा। चार पैरों में फिर सुख लगेगा क्या?

कुदरत तो हेल्पफुल है

आपको कौन दुःख देते हैं? आपके क्रोध-मान-माया और लोभ। उसमें कुदरत का क्या दोष?

कुदरत किसी को भी दुःख देने के लिए सर्जित नहीं हुई है। यदि कुदरत दुःख दे ऐसा होता न, तब तो ये सभी जानवर दुःखी होते। क्या उनके लिए अस्पताल होते हैं? ये समुद्र में, करोड़ों, अरबों, अनंत.. जीव हैं, उस समुद्र में अस्पताल है? और इन इंसानों की चार अरब की बस्ती में कितने अस्पताल हैं! हर जगह डॉक्टर! यानी इन मनुष्यों को जीना ही नहीं आता है न! कितने अस्पताल! झगड़ों के लिए कोर्टे कितनी, वकील कितने! यानी कि जीना ही नहीं आता न!

संसार है यह तो! वह अहंकार उत्पन्न हो चुका है, अहंकार यानी विकल्प से। आत्मा का विकल्प यानी अहंकार। मैं और मैंने किया। बस चला फिर। फिर मार खाता है तब भी उसे अहंकार छोड़ता नहीं है क्योंकि थोड़ी ही देर बाद उसे ऐसा लगता है कि मेरे ये चार बैल, ये गायें वगैरह, इन सब से मैं बड़ा हूँ न? 'मैं बड़ा हूँ', ऐसा भान रहता है इसलिए इन लोगों को कोई दुःख ही नहीं है! चक्रवर्ती राज्य दें तब भी लेने जैसा नहीं है। फँसने के बाद उसमें दुःख तो अपार हैं। इसके बजाय तो हमारे खुद के देश (आत्मा में) चले जाओ न! उसके जैसा कोई सुख नहीं है।

अपने देश (आत्मा) में जो सुख है उसके जैसा किसी देश में नहीं है।

विकल्पी होने के बाद मनुष्य अहंकारी हो जाता है। क्या होता है?

प्रश्नकर्ता : अहंकारी हो जाता है।

दादाश्री : तब तक जो अहंकार है, वह नॉर्मल अहंकार कहा जाता है। साहजिक अहंकार, वास्तविक अहंकार। परंतु विकल्पी हुआ इसलिए ज़िम्मेदार बना और ज़िम्मेदार बनने के बाद में दुःख आता है। जब तक ज़िम्मेदार नहीं बनता, तब तक कुदरत कभी भी किसी को दुःख नहीं देती।

कुदरत के घर पर तो निश्चय में दुःख नहीं है और व्यवहार में भी दुःख नहीं है। पूरे जगत् को इतना समझ में नहीं आने से व्यवहार दुःखदायी हो गया है। उसे व्यवहार नहीं आता है। व्यवहार निर्लेप होना चाहिए, निर्लेप व्यवहार हो जाने पर फिर आनंद की सीमा नहीं रहती।

प्रश्नकर्ता : मनुष्य ही दुःख उत्पन्न करते हैं?

दादाश्री : हमने ही उत्पन्न किए हैं। हमारे द्वारा उत्पन्न किए हुए दुःख हैं।

विकल्पी हुआ इसलिए जवाबदार बन जाता है। जवाबदार बन जाता है इसलिए कुदरत अवश्य मार लगाती है। कुदरत किसी को दुःख नहीं देती। कुदरत तो सभी के लिए 'हेल्पफुल' ही है!

आगे जाना हो उसे भी कुदरत 'हेल्प' करती है और पीछे जाना हो उसे भी कुदरत 'हेल्प' करती है। 'नेचर' क्या कहती है? 'आई विल हेल्प यू'। तुझे जो काम करना हो, चोरी करनी हो तो 'आई विल हेल्प यू'। कुदरत की तो बहुत बड़ी 'हेल्प' है, कुदरत की 'हेल्प' से तो यह सब चलता है! लेकिन तू निश्चित नहीं करता कि मुझे क्या करना है? यदि तू निश्चित करे तो कुदरत तुझे 'हेल्प' करने के लिए तैयार ही है। 'फर्स्ट डिसाइड' कि मुझे इतना करना है, फिर उसे निश्चयपूर्वक सुबह में पहले याद करना चाहिए। आपके निश्चय के प्रति आपको 'सिन्सियर' रहना चाहिए, तो कुदरत आपके पक्ष में 'हेल्प' करेगी। आप कुदरत के 'गेस्ट' हो।

आप सभी को घर बैठे खाने-पीने की सभी चीज़ें मिल जाती हैं। संडास में जाओ तो वहाँ हवा भी मिलती है। आपको आपकी आवश्यकता की, सभी नेसेसिटी की चीज़ें देने के लिए कुदरत बंधी हुई है। और आपको गेस्ट की तरह रखा है! अब आपको यदि गेस्ट की तरह रखा है तो फिर आपको कैसे रहना चाहिए? गेस्ट की तरह रहना चाहिए। जबकि आप वहाँ रसोई में जाकर, कढ़ी में नमक डालकर हिलाते रहो, तो फिर क्या होगा? कुदरत बंधी हुई है कि 'मैं आपको गेस्ट की तरह रखने के लिए बंधी हुई हूँ।'

कुदरत के यहाँ 'गेस्ट'

प्रश्नकर्ता : हम कुदरत के 'गेस्ट' हैं या 'पार्ट ऑफ नेचर' हैं?

दादाश्री : 'पार्ट ऑफ नेचर' भी हैं और 'गेस्ट' भी हैं। 'गेस्ट' के तौर पर रहना पसंद करते हैं। चाहे जहाँ बैठो, तब भी आपको हवा मिलती रहेगी, पानी मिलता रहेगा और वह भी 'फ्री ऑफ कॉस्ट'! जो अधिक क़ीमती है, वह 'फ्री ऑफ कॉस्ट' मिलता रहता है। कुदरत को जिसकी क़ीमत है, उसकी इन मनुष्यों को क़ीमत नहीं है। और कुदरत के लिए जिसकी (जैसे कि हीरे) क़ीमत नहीं है, उसकी लोगों को बहुत क़ीमत है।

इस संसार में जितने भी जीव हैं वे कुदरत

के गेस्ट हैं, प्रत्येक चीज़ कुदरत आपके पास तैयार करके भेजती है। यह तो आपको *कढ़ापा* (कुढ़न, क्लेश)-*अजंपा* (बेचैनी, अशांति, घबराहट) *कढ़ापा-अजंपा* रहा करता है। क्योंकि सही समझ नहीं है और आपको ऐसा लगता है कि 'मैं करता हूँ'। यह भ्रांति है। बाकी किसी से इतना सा भी नहीं हो सकता।

यहाँ जन्म होने से पहले, हमारे बाहर निकलने से पहले लोग सारी तैयारियाँ करके रखते हैं! भगवान की सवारी आ रही है! जन्म लेने से पहले बालक को चिंता करनी पड़ती है कि बाहर निकलने के बाद मेरे दूध का क्या होगा? वह तो दूध की कुँडियाँ आदि सब तैयार ही होता है। डॉक्टर, दाईयाँ तैयार होते हैं। और दाई न हो तो नाईन भी होती ही है। लेकिन कुछ न कुछ तैयारी तो रहती ही है, फिर, जैसा 'गेस्ट' हो वैसी! 'फर्स्ट क्लास' के हों, उनके लिए तैयारियाँ अलग, 'सेकन्ड क्लास' की अलग और 'थर्ड क्लास' की अलग, सब क्लास तो हैं न? यानी कि आप सारी तैयारियों के साथ आए हो। तो फिर हाय-हाय और अजंपा किसलिए करते हो?

जिनके यहाँ 'गेस्ट' हों, उनके वहाँ पर विनय कैसा होना चाहिए? मैं आपके यहाँ 'गेस्ट' होऊँ तो मुझे 'गेस्ट' की तरह विनय नहीं रखना चाहिए? आप कहो कि 'आपको यहाँ नहीं सोना है, वहाँ सोना है', तो मुझे वहाँ सो जाना चाहिए। दो बजे खाना आए तो भी मुझे शांति से खा लेना चाहिए। जो परोसे वह आराम से खा लेना पड़ता है, वहाँ शिकायत नहीं कर सकते। क्योंकि 'गेस्ट' हूँ। अब यदि 'गेस्ट' रसोई में जाकर कढ़ी हिलाने लगे तो कैसा कहा जाएगा? घर में दख़ल देने जाओगे तो आपको कौन खड़ा रखेगा? तेरी थाली में बासुंदी परोसे तो खा लेना। वहाँ ऐसा मत कहना कि 'हम मीठा नहीं खाते।' जितना परोसा जाए उतना आराम से खाना। खारा परोसे तो खारा खा लेना। बहुत नहीं भाए तो थोड़ा खाना, परंतु खाना ज़रूर! 'गेस्ट' के सभी नियमों का पालन करना। 'गेस्ट' को राग-द्वेष नहीं करने चाहिए, 'गेस्ट' राग-द्वेष कर सकते हैं? वे तो विनय में ही रहते हैं न?

हम तो 'गेस्ट' के तौर पर ही रहते हैं, हमारे लिए सभी चीज़ें आती हैं। जिनके वहाँ 'गेस्ट' के तौर पर रहें, उन्हें परेशान नहीं करना चाहिए। हमें सारी चीज़ें घर बैठे मिल जाती हैं, याद करते ही हाज़िर हो जाती हैं और हाज़िर नहीं हो तो हमें परेशानी भी नहीं। क्योंकि वहाँ 'गेस्ट' बने हैं। किसके वहाँ? कुदरत के घर पर! कुदरत की मर्ज़ी न हो तो हम समझें कि हमारे हित में है और मर्ज़ी उसकी हो तो भी हमारे हित में है। हमारे हाथ में करने की सत्ता हो, तो एक तरफ दाढ़ी उगे और दूसरी तरफ दाढ़ी नहीं उगे तो हम क्या करें? हमारे हाथ में करने का होता तो सब घोटाला ही हो जाता। यह तो कुदरत के हाथों में है। उसकी कहीं भी भूल नहीं होती, सब पद्धति अनुसार का ही होता है। देखो चबाने के दाँत अलग, छीलने के दाँत अलग, खाने के दाँत अलग। देखो, कितनी सुंदर व्यवस्था है! जन्म लेते ही पूरा शरीर मिलता है, हाथ, पैर, नाक, कान, आँखें सबकुछ मिलता है, लेकिन मुँह में हाथ डालो तो दाँत नहीं मिलते हैं, तब कोई भूल हो गई होगी कुदरत की? नहीं, कुदरत समझती है कि जन्म लेकर तुरंत उसे दूध पीना है, दूसरा आहार पचेगा नहीं, माँ का दूध पीना है, यदि दाँत देंगे तो वह काट लेगा! देखो कितनी सुंदर व्यवस्था की हुई है! जैसे-जैसे ज़रूरत पड़ती है, वैसे-वैसे दाँत निकलते जाते हैं। पहले चार आते हैं, फिर धीरे-धीरे दूसरे आते हैं और इन बूढ़ों के दाँत गिर जाते हैं तो फिर वापस नहीं आते हैं।

कुदरत सभी तरह से रक्षण करती है। राजा की तरह रखती है। परंतु अभागे को रहना नहीं आता, फिर क्या हो सकता है?

जब मार पड़ती है तब 'इन्वेन्शन' होता है

कुदरत का नियम ऐसा है कि जितने मोक्ष में गए, उनमें से अस्सी प्रतिशत नर्क में जाने के बाद ही मोक्ष में जाते हैं! नर्क में नहीं गया हो तो मोक्ष में नहीं जाने देते! मार पड़नी ही चाहिए। खाना-पीना सबकुछ मिलता रहे, 'आइए पधारिए, पधारिए' ऐसा सभी करे तो 'इन्वेन्शन' रुक जाता है।

प्रश्नकर्ता : दादा! सीधे, सरल और सेवाभावी लोगों का विकास खराब लोगों से कम क्यों होता है?

दादाश्री : खराब लोगों का विकास होता ही नहीं। परंतु खराब व्यक्ति की खराबी बढ़ती जाए, तब उसे मार पड़ती है। तब उसका 'इन्वेन्शन' चलता है। उसके बाद खराब व्यक्ति उस सीधे व्यक्ति से भी आगे बढ़ जाता है जबकि वह सीधा व्यक्ति धीरे-धीरे आगे बढ़ता रहता है। उसका तो दो घंटे में भी बोरसद (बड़ौदा के पास एक गाँव) नहीं आता! उसे कोई अड़चन भी नहीं आती। खो गया, कुछ नहीं मिला, तब 'इन्वेन्शन' होता है।

सीधे व्यक्ति को सेवाभाव ही धर्म लगता है। सेवाभाव अर्थात् किसी को सुख देना, किसी की अड़चन दूर करना, वही धर्म है। परंतु वह वास्तविक धर्म नहीं माना जाता।

जहाँ 'मैं कर रहा हूँ, मैं कर्ता हूँ, मैं भोक्ता हूँ'... जब तक यह 'मैं-पन' है, तब तक सत्धर्म उत्पन्न नहीं होता। लौकिक धर्म उत्पन्न होता है। अलौकिक धर्म तो, जब मार खाए न तभी भीतर 'इन्वेन्शन' होता है। नहीं तो 'इन्वेन्शन' किस तरह होगा?

सूक्ष्म अहंकार के परमाणु इकट्ठे हो जाने पर उन्हें निकालना बहुत मुश्किल है। इन परमाणुओं की सेटिंग ही ऐसी है कि अहंकार उत्पन्न हुआ कि उसे मार पड़ती है। कुछ प्राप्ति का अहंकार आया नहीं कि गिर ही पड़ा समझो। दैवीशक्तिओं का आविर्भाव हुआ हो और अहंकार हो जाए, तो जितना ऊपर चढ़ा हो उतना ही नीचे चला जाता है। दैवीशक्ति के आधार पर हुआ हो और 'मैंने किया', ऐसा अहंकार करे, तो अधोगति में जाएगा। अगर दैवीशक्ति का दुरुपयोग करता है, तो भी अधोगति होती है। जब दुरुपयोग का रीएक्शन आता है, तब नर्कगति होती है।

नर्क में अवधिज्ञान इसलिए है कि उसे और भी अधिक दु:ख हो। अवधिज्ञान नहीं होता तो अच्छा था लेकिन कुदरत का नियम है कि उसे और अधिक दु:ख होना ही चाहिए।

नर्क में दु:ख तो बेहिसाब हैं ही लेकिन यह जो (अवधि)ज्ञान है, उससे वह यहाँ का देख सकता है। यदि वह उपयोग रखे कि, 'मुझे देखना है' तो उसे यहाँ का सबकुछ दिखाई देगा।

अब वह अवधिज्ञान में क्या करता है कि उसके फादर-मदर, भाई, वे सब अभी यहाँ मनुष्य लोक में कहाँ पर हैं, ऐसा पता लगाता है। वह अवधिज्ञान में देखता है। सब लोग बातें कर रहे होते हैं, चाय पी रहे होते हैं, ढोसा वगैरह सब खा रहे होते हैं, वह देखता है। उसे ज्ञान में क्या दिखाई देता है कि, 'ओहोहो! ये फादर-मदर, ये मेरी वाइफ, ये सब मज़े कर रहे हैं और सिर्फ मैं ही नर्क में! मैंने गलत किया तभी यह दु:ख मिला न!' अत: बल्कि और ज़्यादा दु:खी हो जाता है। वह ज्ञान उसे ज़्यादा दु:खी करने के लिए प्राप्त हुआ है।

उसे बहुत दु:ख होता है कि मैंने गलत

कर्म बाँधे इसीलिए मुझे भुगतना पड़ रहा है। मैंने कर्म बाँधे, लोगों के यहाँ चोरियाँ की, लुच्चाई की, मैंने हराम का इकट्ठा किया और भोगा उन्होंने। क्योंकि वे तो मना कर रहे थे कि, 'आप अच्छे काम करना, भाई। हमें नहीं चाहिए, ऐसा।' लेकिन वह तो कर्म कर आया है न!

कुदरत दंड देती है नियमानुसार

प्रश्नकर्ता : दादा! जब इंसान पर एक बार दुःख पड़ने लगे तो जब वह पूरी तरह से दुःख में दुःखी होने लगे तब तुरंत उसे कोई रास्ता सूझता है न! जब तक वह बीच में ही घूमता रहता है तब तक तो जन्मोंजन्म तक उसका *निकाल* ही नहीं आता।

दादाश्री : कुदरत के नियम ऐसे हैं। कुदरत आपको जो दुःख देती है न, वह भी नियमानुसार देती है। पहले अठानवे फिर सतानवे फिर छियानवे। एकदम से नहीं देती।

प्रश्नकर्ता : उसमें भी क्रम होता है, दादा?

दादाश्री : जब इंसान गुस्सा करता है न, यदि एकदम से आप पर गुस्सा होता है तो उस समय पहले सेकन्ड में फाइव हंड्रेड, दूसरे सेकन्ड में फोर हंड्रेड फिफ्टी, तीसरे सेकन्ड में फोर हंड्रेड ऐसा करते-करते गुस्सा खत्म हो जाता है। आपको समझ में आया?

प्रश्नकर्ता : हाँ। गुस्सा धीरे-धीरे बढ़ता जाता है और फिर कुदरती रूप से ही काबू में रहता है?

दादाश्री : कुदरत का नियम ही ऐसा है।

प्रश्नकर्ता : दादा, यानी कि जो पिछले कर्म होते हैं, जो बहुत भारी कर्म होते हैं, यानी कि यों जब कर्म किए होंगे तब तो बहुत भयंकर कर्म किए होंगे लेकिन आज यदि उन्हें एक साथ भुगतना पड़े तब तो हम भुगतने की हालत में ही नहीं रहते।

दादाश्री : कर्म करने वाले को उसका भान नहीं रहता लेकिन कुदरत उसे भानपूर्वक फल देती है। उसे परेशानी में नहीं डालती। अरे... यों नौ महीने तक धीरे-धीरे अंदर प्रगति होती रहती है। वर्ना यदि डेढ़ महीने में ही तैयार हो जाए तो? यानी कि फिर क्रमशः बच्चे का शरीर बढ़ता जाता है। वर्ना परेशानी हो जाती। स्त्री को भी बोझ नहीं लगता। स्त्री को पता ही नहीं चलता। आपको समझ में आया मैं क्या कहना चाहता हूँ? इसके पीछे क्या साइन्स है, वह आपको समझ में आया?

अप एन्ड डाउन, वह है कुदरती नियम

यह जो कुदरत का नियम है 'अप एन्ड डाउन, अप एन्ड डाउन' चलता ही रहता है। ऐसा नियम ही है, इस जगत् का नियम ही ऐसा है।

जब बढ़ता है तब फिर दूसरे दिन एक अंश संकुचित हो जाता है। यदि निन्यान्वे हो तो उसके अठानवे हो जाते हैं और तीसरे दिन वे सौ हो जाते हैं। इस प्रकार जब बढ़ता है तब ऐसा होता है। जब घटता है तब भी ऐसा होता है, इसी तरह से जारी रहता है। जब घटता है तब वर्धमान होने (बढ़ने) के बाद हियमान (कम) होता है। सभी लोग इन तरीकों को समझ नहीं पाते और इसलिए लोग उलझन में पड़ जाते हैं। नुकसान हो रहा हो न, फिर भी एक दिन तो मन में ऐसा हो जाता है कि, 'अब ऐसा ही ठीक है।' फिर अगले दिन डबल नुकसान! कम होने लगा था उसमें वापस यह उसे आरोह (बढ़ावा) देता है। ये सारे कुदरत के नियम ही हैं, सारे नैचुरल नियम हैं। आप जब अस्पताल में जाते हो न, तब देखते हो न, ग्राफ?

प्रश्नकर्ता : हाँ, उसमें...

दादाश्री : वह इस तरह से उतरता है, फिर ऐसे चढ़ता है, लेकिन सही में वह जो होता है न, उसमें ज़रा सा फर्क होता है कुदरत की दृष्टि से। उसमें उतार-चढ़ाव होता रहता है। उसमें उतरते समय भी उतार-चढ़ाव तो होता ही रहता है। चढ़ते समय भी उतार-चढ़ाव होकर ही चढ़ता है। सिर्फ चढ़ता ही नहीं रहता है यह। वर्ना आशा ही नहीं रहती और सारी आशाएँ टूट जाएगी।

इंसान की आशा ही टूट जाती है फिर। यानी कि जब उदय खराब होता है तब आज जरा सा धक्का लगता है, कल वापस, 'अच्छा हो गया है', तो अच्छा लगता है। फिर से दो-चार दिन अच्छा रहता है और फिर वापस एकदम से गहरा धक्का लग जाता है। इस तरह से उसे स्लिप करके नीचे ले जाता है। और जब ऊपर चढ़ाता है तब भी उसी तरह से चढ़ाता है।

कुदरत के नियम से ही यह सब चलता रहता है।

कुदरत का टम्बलिंग बैरल

कुदरत का नियम ऐसा है कि दस लाख साल में नौ वासुदेव और नौ प्रतिवासुदेव, वे दोनों जन्म लेते ही रहते हैं। एक तरफ नारायण का जन्म होता है दूसरी तरफ प्रतिनारायण का जन्म होता है। वह भी लड़ने के लिए ही। ऐसे फिर इतिहास बनता है। वर्ना इतिहास नहीं होता तो क्या पढ़ते लोग? महाभारत कैसे पढ़ते? यदि रामचंद्रजी की पत्नी का हरण ही नहीं किया होता तो क्या पढ़ते ये लोग?

प्रश्नकर्ता : तो क्या पढ़ने के लिए झगड़ा करना ज़रूरी है?

दादाश्री : नहीं, यह तो लोगों की खुराक है। पढ़ना तो लोगों की खुराक है। लोगों को खुराक चाहिए न! अतः ये झगड़े करवाने वाले नारद की भी ज़रूरत है, वे दोनों को लड़वाते भी हैं सचमुच में! ये सब चीज़ें ज़रूरी हैं। यह सारा विटामिन है।

प्रश्नकर्ता : इससे तो बहुत ख़ानाख़राबी हो जाती है। अब, अपने यहाँ शांति से आनंद ले सकते हैं लेकिन यदि यहाँ पर आपस में झगड़े होने लगें, मारकाट होने लगे तो, उसमें कैसा आनंद? इस सृष्टि में तो ऐसा ही चला आ रहा है!

दादाश्री : ऐसा है न, कि आप आनंद किसे कहते हो? यदि आपको पंद्रह दिनों तक शादी में छोड़ दें तो आप क्या करोगे?

प्रश्नकर्ता : बोरियत हो जाएगी।

दादाश्री : तो फिर आनंद जैसी चीज़ किसे कहते हो?

प्रश्नकर्ता : एक मेरीटॉक्रसी नामक विचार चलता आया है और अमरीका में उसका विरोध भी होता है।

दादाश्री : गुणवत्ता के स्तर पर?

प्रश्नकर्ता : ऐसा सबकुछ चलाना चाहिए।

दादाश्री : यानी अभी किस स्तर पर चल रहा है?

प्रश्नकर्ता : समानता के स्तर पर नहीं, यों गुणवत्ता के स्तर पर चल रहा है।

दादाश्री : नहीं, परंतु अभी किस स्तर पर चल रहा है?

प्रश्नकर्ता : अभी तो गुणवत्ता के स्तर पर ही चल रहा है।

दादाश्री : तो फिर अब नया, नया, नया गुणवत्ता का स्तर कौन सा ढूँढ निकाला है?

प्रश्नकर्ता : वह तो हमें अभी पता चला। अभी यह नई विचारधारा आई है।

दादाश्री : किस तरह की?

प्रश्नकर्ता : इतने समय से कॉम्युनिज़म आया, फिर सोशलिज़म की बातें करते हैं, गांधीइज़म की बातें की हैं, कुछ-कुछ बातें की हैं। अब वह जो नई विचारधारा आई है, वह ऐसी है कि यह मेरीटॉइज़म यानी कि प्रत्येक को अपनी हैसियत के अनुसार रहना चाहिए। यानी कि उस भाव को कबूल करते हैं, जैसा आपने अभी कहा वैसा।

दादाश्री : वह ठीक है। जब वह पहले वाला इज़म सड़ जाता है, तब दूसरा नया इज़म उत्पन्न होता है। फिर वह भी सड़ जाता है तब फिर नया इज़म शुरू होता है। लेकिन इज़म तो उतने ही हैं, ज़्यादा नहीं है। पूरा राउन्ड है, इज़म का।

प्रश्नकर्ता : तभी संसार चलता है न !

दादाश्री : इज़म का राउन्ड है। जब एक सड़ जाता है तब फिर दूसरा उत्पन्न होता है। फिर जब वह भी सड़ जाता है, तब तीसरा उत्पन्न होता है लेकिन हैं वही के वही। कब से वही के वही हैं! वही के वही चक्कर लगाते रहते हैं। समझ में आया न?

प्रश्नकर्ता : व्यवस्थित की शृंखला है।

दादाश्री : लोगों को नया लगता है। लोगों को हर रोज नया लगे, ऐसा कुछ न कुछ होता रहता है। वर्ना लोगों को अच्छा ही नहीं लगता न! चैन ही नहीं पड़ता न! इतिहास ज़रूरी है, लड़ाई होनी ज़रूरी है, महाभारत ज़रूरी है, सभी कुछ ज़रूरी है।

प्रश्नकर्ता : जैसे कि सिनेमा में स्टन्ट और डॉन्स चाहिए, सबकुछ उसके जैसा है।

दादाश्री : हाँ, क्राइस्ट चाहिए, पैगम्बर साहब चाहिए, महावीर चाहिए, राम चाहिए। राम की सीता का हरण हो जाए ऐसा भी चाहिए। सभी की आवश्कता है, वर्ना फिर लोग क्या पढ़ेंगे?

प्रश्नकर्ता : लोगों के पढ़ने के लिए तो ठीक है लेकिन झगड़ा क्यों करते हैं आपस में? धर्म के नाम पर फिर जो झगड़ा करते हैं वह क्यों करते हैं?

दादाश्री : आप कभी लुहार के यहाँ नहीं गए?

प्रश्नकर्ता : लुहार के वहाँ गए है।

दादाश्री : वह लोहे को गरम करके, लोहे से ही पीटता है। ऐसा क्यों करता है? लोहे का लोहे से झगड़ा क्यों करवाता है?

प्रश्नकर्ता : गढ़ाई, गढ़ता है।

दादाश्री : उसे आकार देता है। तो इन झगड़ों से लोगों की गढ़ाई होती हैं। यानी चौर्यासी लाख प्रकार के आकारों की गढ़ाई होती है, इन झगड़ों से। अतः इस सभी की ज़रूरत है, इन सभी की।

ये अभी डेवेलप हो रहा है। ये कच्चे लोहे को पिघलाने के कारखाने होते हैं न, उस कच्चे लोहे में से बड़ी-बड़ी चीज़ें बनाते हैं और फिर उन पर जो नुकीले कांटों जैसे होते हैं। वे निकालने के लिए उन्हें टम्बलिंग बैरल में घूमाना पड़ता है। वह जो बैरल होता है न, उसमें सब को एक साथ डाल देते हैं और फिर इलेक्ट्रिसिटी से चलाते हैं। घरर... घरर घूमता रहता है और तब अंदर टकरा-टकराकर सारे नुकीले भाग टूट जाते हैं। इसी तरह अभी यह नेचर का (कुदरत का) टम्बलिंग बैरल घूम रहा है। नुकीले भाग को तोड़ने के बाद बाहर निकालेंगे तब फर्स्ट क्लास हो जाएगा।

स्वाद देकर, अनुभव करवा कर छुड़वाती है कुदरत

कुछ लोगों में तो लोभ बहुत बढ़ जाता है और अगर कोई व्यक्ति 20 लाख रुपए दबा दे तो एक बार तो भीतर में ब्रेक डाउन हो जाता है। अंदर जैसे नसें फट जाती हैं।

लेकिन फिर उस पर से एक विचार आता है कि, 'पैसों में बिल्कुल सुख नहीं है'। उससे उसकी लोभ की ग्रंथि विलय होती जाती है। ऐसे कुदरत के नियम हैं। पहले ग्रंथियाँ उत्पन्न करती हैं, बड़ी करती है और फिर विलय करती है। उत्पन्न करती है, बड़ी करती है और उसका स्वाद दिलवाती है और फिर उसे विलय करके उसका भी स्वाद दिलवाती है। कुदरत डेवेलप करती है सबकुछ। अनुभव करवाती है तरह-तरह के। पक्षपात में डालकर फिर निष्पक्षपाती बनाती है। ये फॉरेन वाले बहुत ज़्यादा पक्ष में नहीं पड़े होते। अत: उन्हें धीरे-धीरे पक्ष में डालती है यहाँ पर डेवेलप करके। और पक्ष में डालने के बाद अब निष्पक्षपाती बनो क्योंकि कभी भी यदि सोना शुद्ध करना हो तो, उसे भट्ठी में लाना ही पड़ेगा। अत: इस भट्ठी जैसी भट्ठी कहीं और नहीं है इस पूरे वर्ल्ड में। वह भट्ठी इन्डिया में है। यहाँ जितने लोग आ चुके हैं न, वे शुद्ध सोना बनने की तैयारी में है और फिर शिकायत करते हैं... 'अरे! तुझे शुद्ध नहीं होना है?' तब कहेंगे, 'शुद्ध होना है'। तो भट्ठी में पड़े रहो। यह तो भट्ठी है! फिर हम आपको भट्ठी में से बाहर निकालेंगे। भट्ठी से बाहर निकालने वाले मिल जाते हैं। लेकिन वह तो, भट्ठी में ही पड़ा रहता है। रात-दिन, कभी परेशानी कम ही नहीं होती। अशांति कम करने जाए न, तो बल्कि बढ़ जाती है। 'कम करने का प्रयत्न किया इसलिए बढ़ गई,' कहेगा।

ज्ञानी निकालते हैं अंतिम अहंकारी मैल

हिन्दुस्तान के बाहर जो 'इगोइज़म' है, वह साहजिक 'इगोइज़म' है। उनका 'इगोइज़म' कैसा है? जहाँ जाना है, वहाँ पर जाने का 'इगोइज़म' करता है और जहाँ नहीं जाना है, वहाँ नहीं जाने का 'इगोइज़म' करता है और हमें जहाँ नहीं जाना है वहाँ चले जाते हैं और जहाँ जाना है वहाँ मना कर देते है! अपने यहाँ सारा विकल्पी 'इगोइज़म' है। उन लोगों का साहजिक 'इगोइज़म' होता है। गाय-भैंसों को होता है वैसा। वहाँ चोरी करने वाला चोरी करता रहता है, बदमाशी करने वाला बदमाशी करता है और 'नोबल' हो वह नोबल रहता है। अपने यहाँ तो नोबल भी चोरी करते हैं और चोर भी नोबिलीटी करते हैं। इसलिए, यह देश ही आश्चर्यजनक है न! यह तो 'इन्डियन पज़ल' (भारतीय पहेली) है! जो 'पज़ल' किसी से 'सोल्व' नहीं हो सकता। फ़ॉरेन वाले बुद्धि लड़ा-लड़ाकर थक जाते हैं, परंतु उन्हें इसका 'सोल्युशन' नहीं मिलता। चाचा का बेटा ऐसे कहता है कि 'गाड़ी नहीं दे सकते, साहब आने वाले हैं!' पूरा अहंकार ही कपट वाला!

'इगोइज़म' बढ़ता है वह भी ठीक है, क्योंकि वह 'डेवेलपमेन्ट' (विकास) है। इन कॉलेजों में सबसे अंतिम पीएच.डी होने जाते हैं, परंतु जितने बन सके उतना सच। सभी नहीं बनते। धीरे-धीरे 'डेवेलप' (विकसित) होता है। 'इगोइज़म' बढ़ता है, वह भी ठीक है। और जो क्रियाएँ करते हैं, वह सब ठीक है। वे अहंकार बढ़ाती हैं, और ऐसे करते-करते सब अनुभव चखते-चखते फिर आत्मानुभव होता है।

प्रश्नकर्ता : फिर अंतिम 'स्टेज' (स्थिति) में अहंकार निकल जाता है!

दादाश्री : फिर उसे ज्ञानी मिल जाते हैं।

हर एक 'स्टेन्डर्ड' के शिष्य तैयार होते हैं, उसी के अनुसार उसे शिक्षक मिल जाते हैं, ऐसा नियम हैं।

उसमें जो अंतिम 'ग्रेड' के दो-चार होते हैं उन्हें 'ज्ञानी पुरुष' मिल जाते हैं, तब वे पास हो जाते हैं। तब तक ऐसे करते-करते आगे बढ़ते हैं।

प्रश्नकर्ता : अहंकार खुद के प्रयत्न से छूटता है या कुदरती रूप से छूटता है?

दादाश्री : संपूर्ण नहीं छूटता। स्वप्रयत्न से कुछ हद तक छूट सकता है। जैसे कपड़ों में से मैल निकालने के लिए साबुन से धोएँ, तब साबुन उसका मैल छोड़ता जाता है। साबुन का मैल निकालने के लिए टीनोपोल डालो तो टीनोपोल अपना मैल छोड़ता जाता है, परंतु अंतिम मैल अपने आप नहीं छूट सकता। अंतिम मैल निकालने के लिए 'ज्ञानी पुरुष' चाहिए।

'ज्ञानी पुरुष' मिल जाएँ तब छुटकारा होता है, नहीं तो छुटकारा नहीं हो पाता। तब तक कुदरती रूप से टकरा-टकराकर अहंकार टूटता जाता है।

ज्ञानी के परिचय से विलय होता है अहंकार

प्रश्नकर्ता : ज्ञानी अहंकार कैसे खत्म कर सकते हैं।

दादाश्री : ज्ञानी तो बहुत तरीकों से अहंकार खत्म कर देते हैं। वे तो तेज़ी से खत्म कर देते हैं। हम से मिले, हमारा परिचय हुआ न, यानी दिनोंदिन अहंकार खत्म होता रहता है।

प्रश्नकर्ता : क्या यह सही है कि अगर हम आपके वातावरण में, सत्संग में, सानिध्य में रहें तो हमारा अहंकार जल्दी खत्म हो जाएगा?

दादाश्री : अहंकार को खत्म नहीं करना है। (इस ज्ञान प्राप्ति के बाद) अहंकार तो खत्म हो ही चुका है। आपमें अब डिस्चार्ज अहंकार रहा है। अब सत्संग से आपकी समझ बढ़ती जाती है, दर्शन पूरी तरह से खुलता जाता है, अन्वेइल्ड (अनावृत) हो जाता है। हाँ, उसके लिए हमारे सानिध्य में आना चाहिए। तीन सौ घंटे, थ्री हंड्रेड अवर्स, तो फुल हो जाएगा, फुल मून (पूर्ण चंद्र)!

प्रश्नकर्ता : हमारे अहंकार का जो स्वरूप है, उसे ज़ीरो पर लाने के लिए पुरुषार्थ का कौन सा बटन है?

दादाश्री : सिर्फ शुद्ध उपयोग। जितना शुद्ध उपयोग उतना ही अहंकार विलय होता जाता है। और यह ज्ञान देने के बाद इगोइज़म की दशा कैसी होती है? तब कहें, आज अगर बहुत ठंड पड़ी हो और बर्फ बनाने वाले के पास बर्फ बची रह जाए, तब वह सोचता है कि यह कब बिकेगी? कहाँ रखेगा उसे? अत: वह एकदम सस्ता कर देता है। तब यदि कोई सेठ होगा तो कहेगा, 'बर्फ भर लो।' अब, बर्फ जमा कर लेता है। चाहे कितनी भी बोरियाँ बिछाकर ढके फिर भी वह कम होती जाएगी या बढ़ती जाएगी? किस तरह कम होती जाएगी? रात में कैसे कम होगी? वह तो निरंतर पिघलती ही रहती है। वैसे ही यह ज्ञान देने के बाद अहंकार भी विलय होता ही रहता है। फिर कुछ लोग तो बोरियाँ लपेटते रहते हैं, उसमें बुरादा डालते रहते हैं। अरे, मत दबाओ।

नदी में पत्थर अनेक, और शालिग्राम?

प्रश्नकर्ता : इस सृष्टि के क्रम की कुछ बातें समझ में नहीं आतीं कि जो लोग आपके पास आए और उन्हें आपके पास से आत्मज्ञान प्राप्त हुआ, लेकिन दूसरे लोगों को क्यों नहीं होता होगा?

दादाश्री : यह सभी लोगों के लिए नहीं है। ऐसा है, यह जो पूरी सृष्टि है न, वह प्रवाह के रूप में है। अनादि प्रवाह से चलता ही रहता है। निरंतर, एक क्षण भी रुके बगैर प्रवाह जारी ही रहा है। आपको कौन सा प्रवाह दिखाई देता है? आपको व्यवहार प्रवाह दिखाई देता है। आप दूसरा प्रवाह देख नहीं सकते। वे व्यवहार प्रवाह सभी इन्द्रियगम्य है और प्रवाह निरंतर जारी ही है।

प्रवाह के रूप में यानी कि जहाँ पर समुद्र का जॉइन्ट (नदी का मुहाना) होता है न, वहाँ पहुँचने पर पानी की मुक्ति! बाकी का, जैसे-जैसे आता जाएगा वैसे-वैसे मुक्ति होती जाएगी। यह पूरा जगत् प्रवाह के रूप में है इसलिए सभी का एकदम से नहीं हो सकता।

प्रश्नकर्ता : हाँ, लेकिन उस प्रवाह के कुछ कण किनारे पर पहुँचते हैं और कुछ समुद्र के बीचोबीच उसका क्या कारण है?

दादाश्री : वह सबकुछ 'साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स' के आधार पर है। इस जगत् में एक परमाणु भी चेन्ज हो सके ऐसा नहीं है।

प्रश्नकर्ता : यह प्रवाह बहता ही रहता है, इसमें जैसे कि इस प्रवाह में से पत्थर इस तरफ अलग होते जाते हैं, उसी प्रकार कौन से जीव कहाँ पहुँचेंगे वह 'व्यवस्थित' है। यानी उस प्रवाह से जो पत्थर अलग हो जाते हैं उनमें भी कोई व्यवस्थित काम नहीं करता होगा?

दादाश्री : सबकुछ 'व्यवस्थित' ही है। यह तो अपनी दृष्टि बदल गई है न, और यह मेरा-तेरा करने गए न, उससे वह 'व्यवस्थित' का ज्ञान अलिप्त हो गया। वह एक्ज़ेक्ट है सारा!

प्रश्नकर्ता : कुछ को संयोग मिल जाते हैं तो शालिग्राम बन जाते हैं और बाकी के वैसे के वैसे ही रहते हैं, यानी फिर वह कैसे तय होता है? उसके पीछे भी कोई बल तो काम करता होगा न?

दादाश्री : सारा 'व्यवस्थित' का ही नियम है। 'व्यवस्थित' के नियम के आगे कुछ बदलाव हो सके, ऐसा नहीं है। सभी पत्थर ही हैं, उसमें से कुछ ही शालिग्राम बन पाते हैं।

प्रश्नकर्ता : यानी प्रश्न ऐसा है कि कुछ पत्थर ही शालिग्राम बनते हैं और कुछ नहीं बनते उसका क्या कारण है?

दादाश्री : वह तो फिर, इसके पीछे सारे व्यवस्थित कॉज़ेज़ व उसके नियम हैं न! यानी कि इस जड़ और चेतन दोनों पर 'व्यवस्थित' लागू होता है। 'व्यवस्थित' सिर्फ चेतन के लिए ही नहीं है।

किसी का मोक्ष, किसी का नहीं, ऐसा क्यों?

प्रश्नकर्ता : अभी भी यह समझ में नहीं आ रहा कि इस प्रवाह में जो सभी जीव आते हैं, उसमें से कुछ ही जीवों को मोक्ष प्राप्ति क्यों होती है? बाकी को क्यों नहीं हो पाती, उसके पीछे कौन से संयोग कारण बनते हैं? उसका क्या कारण है?

दादाश्री : अन्य कुछ नहीं, यह 'व्यवस्थित' ही उसका कारण है और फिर वह नियम के अधीन है। किसी का (मोक्ष) हो जाता है और किसी का रह जाता है ऐसा कुछ नहीं है, नियम से है। नियम, एक के बाद दो, दो के बाद तीन और तीन के बाद पैंतालीस आए न, तो जगत् एक्सेप्ट नहीं करता। कुदरत भी एक्सेप्ट नहीं करती। तीन के बाद चार ही आना चाहिए। अत: ये सब नियम से हैं। फिर जरा भी गप्प नहीं है।

प्रश्नकर्ता : यानी कि जो जीव छूटते हैं, उन जीवों ने पहले जो सत्कर्म किए होंगे, वे उनके काम आते हैं क्या अभी छूटने के लिए?

दादाश्री : वह सत्कर्म नहीं है, वह टाइमिंग है। उसके नियम के अधीन वह छूट जाता है और उसी रास्ते पर हम चल रहे हैं। वे उसी रास्ते से चलकर पहुँचे हैं वहाँ पर। जो कुछ हम भुगतते हैं, वे सब भी वही सारा भुगतकर गए हैं। यानी कि सभी का ऐसा ही है। एकदम से अचानक कोई इनाम मिल जाए ऐसा नहीं है यह जगत्। सबकुछ नियम से है, एक्ज़ेक्टनेस है।

रियल ज्ञान से प्रवाह बंद होने से मोक्ष

प्रश्नकर्ता : इंसान को ये मुश्किलें क्यों आती हैं और जाती हैं? उसके साथ ऐसा क्यों होता है? ऐसा कौन सा तत्त्व है जो उससे ऐसा करवाता है?

दादाश्री : वह खुद नहीं जानता कि खुद प्रवाह में बह रहा है! अत: जितना चला गया उतना दिखाई देता है और जो नया आता है, वह नहीं दिखाई देता। जिस प्रकार गाड़ी में बैठा हुआ व्यक्ति, जितना (रास्ता) पार हो चुका है, उतना ही देख पाता है। बाद में जो नया आने वाला है, उसे नहीं देख सकता उसी प्रकार से यह भी बह रहा है। जगत् यानी अनादि प्रवाह। अनादि से प्रवाह में बह रहा है और वास्तव में खुद नहीं बह रहा है, वह प्रवाह ही उसे ले जाता है। खुद तो ज्ञाता-द्रष्टा है। इसलिए जब तक यह प्रवाह बंद नहीं हो जाता तब तक उसे परेशानियाँ रहेंगी। और जब यह प्रवाह बंद हो जाता है तब उसे मोक्ष कहते हैं।

अनादि प्रवाह है यह। यह कुदरती प्रवाह है। इसे नियति कहा जाता है। यह नियति का प्रवाह है। अब इस प्रवाह में तो चंचलता होती है और खुद चंचल हुआ इसलिए सबकुछ चंचल हो गया। यदि प्रवाह बंद हो जाए, खुद स्थिर हुआ कि सबकुछ स्थिर हो जाता है। प्रवाह में जो ज्ञान है, वह रिलेटिव ज्ञान है। उत्पन्न होता है, विनाश होता है, उत्पन्न होता है, विनाश होता है।

और यदि प्रवाह बंद हो गया तो, रियल ज्ञान हो गया। वहाँ खुद ही, रियल ज्ञान, वह 'खुद' है और रिलेटिव ज्ञान कल्पना है। बात संक्षिप्त में है, समझने की ज़रूरत है।

प्रश्नकर्ता : अपने कुछ शास्त्र ऐसा कहते हैं कि 'कोई व्यक्ति किस समय छूटेगा', वह भी कुदरत ही पक्का करती है वह बात ठीक से समझ में नहीं आयी। यानी वह बात भी जीवों के हाथ में ही गई न?

दादाश्री : ऐसा है न, पक्का कुछ नहीं होता और फिर भी नियम में है। यदि पक्का कहेंगे न, तो इन लोगों का मन अलग ही प्रकार का हो जाएगा। इस तरह से पक्का नहीं बोल सकते। शास्त्रों ने जो बताया है न, उसका लोगों पर असर हो गया है। और हमारे संतों ने आगे क्या बताया, 'वह सब हो जाएगा, यदि प्रारब्ध में है तो हो जाएगा' इसलिए हिन्दुस्तान की इतनी बुरी दशा हुई! प्रारब्ध में होगा ऐसा नहीं बोल सकते। वह तो, ऐसा ही कहना पड़ेगा कि, 'भाई, आँखें खुली रखकर गाड़ी चलाओ और सावधानीपूर्वक चलाओ, फिर यदि टकरा जाए तो वह प्रारब्ध है।'

अभी तो यों ही प्रारब्ध मान बैठे हैं, उसी की वजह से तो इस देश की यह दशा हुई है। इस देश में लगभग हज़ारों सालों से प्रारब्ध और पुरुषार्थ का भेद नहीं हुआ। उनके बीच का भेद,

लाइन ऑफ डिमार्केशन, मैं वह भेद बताने के लिए बैठा हूँ। पुरुष बनने के बाद पुरुषार्थ शुरू हो जाता है। उसकी द्रव्यदृष्टि हो गई यानी पुरुषार्थ शुरू हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन द्रव्यदृष्टि होना, वह भी अपने हाथ की बात नहीं है न?

दादाश्री : जब तक वह अपने हाथ में नहीं है तब तक वह प्रकृति के अधीन है। वह द्रव्यदृष्टि किसके अधीन है? जब पत्थर लुढ़कते हैं तब वे सब इधर से उधर और इधर से उधर जाते हैं और घिसते जाते हैं, आपस में टकरा-टकराकर घिसते जाते हैं, आपस में टकराते हैं। जैसे ये जीवमात्र टकराते हैं न, एक जीव दूसरे जीव को काटता है और दूसरा उसे मारता है न! इस तरह से टकराते, टकराते, टकराते, टकराते जब गोल हो जाता है तब समकित प्राप्त होता है।

तमाम अनुभवों का संग्रहस्थान - केवलज्ञान

यह 'वर्ल्ड इटसेल्फ पज़ल' हो गया है। इसका कारण क्या है कि ये जीव निरंतर प्रवाह में ही बहते रहते हैं, अनादि प्रवाह के रूप में ये जीव बहते ही रहते हैं।

कुदरत की ऐसी करामात है कि यह संसार बंद होगा ही नहीं। यदि भगवान भी बंद करना चाहें तब भी नहीं हो सकेगा! अत: फिर भगवान ने धैर्य धारण किया कि, 'क्या होता है' वह देखा करो और जिसे छूटना है वह ऐसा धैर्य धारण करना। यह संसार जिसे पुसाता नहीं हो, वे 'क्या हो रहा है इसे देखा करे तो छूटेंगे।' 'हम' भी वैसा ही करते हैं।

इस संसार का पूरा स्वरूप ही ऐसा है कि यह साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स अर्थात् कुदरत सबकुछ करती रहती है और आपको 'जानते' रहना है, वही मोक्षमार्ग है।

पूरा जगत् मोक्ष की ओर ही जा रहा है। मोक्ष में जाने के लिए रास्ते में आवश्यक आधार, प्रमाण वगैरह सब साधन हैं, ये सभी। वह भी मोक्ष की तरफ चलता रहे और हम भी चलते रहे और इस प्रकार हेल्प करते हुए, एक-दूसरे के लिए हेल्पफुल बन जाते हैं! लेकिन मोक्ष के लिए यह सब हेल्पिंग (सहायक) नहीं है। ये तो लड़-झगड़कर बल्कि ब्रेक लगाते हैं। वर्ना गरमी का स्वभाव ऐसा है कि वह बारिश को खींच लाती है। जहाँ हो वहाँ से खींच लाती है। गरमी का स्वभाव बढ़ता जाता है और बारिश को खींच लाती है। घबराने जैसा कुछ भी नहीं है।

इस संसार का स्वभाव ऐसा है कि हमें मोक्ष की ओर ले जाता है। मोक्ष को खींच लाता है। संसार जितना ज़्यादा कठिन हो न, उतना ही मोक्ष जल्दी आता है। लेकिन कठिन हो तो हमें विचलित नहीं हो जाना चाहिए, दखल दिए बिना परिस्थिति में एडजस्ट हो जाना चाहिए। सही उपाय करने चाहिए, गलत उपाय करने पर फिर से गिर पड़ते हैं। दु:ख आया तब ऐसा समझना कि मेरे आत्मा के लिए विटामिन मिला और जब सुख प्राप्त हो तो देह का विटामिन मिला, ऐसे समझना।

यह कुदरत ही है। तो यह प्रवाह अविनाशी की तरफ ही जा रहा है। चढ़ने और गिरने के बाद, सभी अनुभव करने के बाद अविनाशी की तरफ जाना है। अनुभव किए बिना तो वहाँ पर पहुँच ही नहीं सकते। हर तरह के अनुभव करने हैं। केवलज्ञान यानी तमाम प्रकार के अनुभवों का संग्रहस्थान। यानी कि ये जो सारे अनुभव करते हैं, वह करेक्ट है।

जय सच्चिदानंद

महात्माओं का व्यक्तित्व सौरभ

प्रश्नकर्ता : महात्मा किसे कहा जाता है?

दादाश्री : जिन्हें आंतरिक संयम रहे, उन्हें महात्मा कहा जाता है। बाह्य संयम तो हो या न भी हो! जब तक कषाय करता है, तब तक महात्मा नहीं कहा जा सकता। 'चंदूभाई' क्रोध करे लेकिन 'खुद' अंदर से मना करता रहे। 'अरेरे, यह क्यों रहा है, यह नहीं होना चाहिए', उसे ऐसा रहे तो वह आंतरिक संयम कहलाता है। उसे महात्मा कहा जाता है!

प्रश्नकर्ता : शुद्धात्मा और महात्मा में क्या फर्क है?

दादाश्री : शुद्धात्मा तो भगवान हैं। महात्मा तो, औरों से ज़रा टॉप पर हो तो उसे महात्मा कहा जाता है। यह तो हम व्यवहार से महात्मा कहते हैं लेकिन हैं तो शुद्धात्मा। शुद्धात्मा तो भगवान हैं लेकिन वे भगवान अभी आप में प्रतीति के रूप में ही प्रकट हुए हैं। वह प्रतीति जब पूर्ण हो जाएगी, तब संपूर्ण अनुभव दशा आएगी। अभी प्रतीति, लक्ष और अनुभव कम-ज़्यादा होते रहते हैं लेकिन जब संपूर्ण अनुभव बरतेगा, जब सभी के साथ अभेदता महसूस होगी, तब वह शुद्धात्मा बन सकेगा। शुद्धात्मा ही परमात्मा है।

वह जो जाना हुआ सही ज्ञान है, वह जाएगा नहीं। वह परमानेन्ट है और वह खुद भी सनातन स्वभाव वाला है, उसका ज्ञान भी सनातन है, सुख भी सनातन है, उसकी बात भी सनातन है और उसकी प्राप्ति के बाद में इंसान को क्या प्राप्त हुआ है? एन.ओ.सी. मिल गया। उस व्यक्ति के लिए किसी भी जगह पर ऑब्जेक्शन नहीं रहेगा। भगवान भी उसके लिए ऑब्जेक्शन नहीं करेंगे।

प्रश्नकर्ता : महात्मा की कार्यवाही क्या है?

दादाश्री : यह जो पिछले जन्म का सारा भरा हुआ माल है, उसे समतापूर्वक जाने देना।

प्रश्नकर्ता : महात्मा की उपमा मिलने के बाद में फिर उसका फर्ज़ क्या है?

दादाश्री : वीतरागता रखनी और राग-द्वेष नहीं करने।

प्रश्नकर्ता : अक्रम मार्ग के महात्माओं की दिनचर्या कैसी होनी चाहिए?

दादाश्री : जैसा माल भरा हुआ है, वह निकलता रहेगा लेकिन राग-द्वेष न हों, वही दिनचर्या है। कोई थप्पड़ लगा जाए, कोई नुकसान कर जाए तो राग-द्वेष न हों, ऐसा होना चाहिए। राग-द्वेष तो दखल है। दखल वाला माल आपको खपाते रहना है, दखल नहीं रहे तब समझो हो चुका। दूसरा, जो है वही माल निकलता रहता है।

प्रश्नकर्ता : महात्माओं का आदर्श जीवन कैसा होना चाहिए?

दादाश्री : आसपास वाले, घर वाले, बाहर वाले, सभी कहें कि 'कहना पड़ेगा'! एक आवाज़, सभी हरी झंडी दिखाएँ। मैं बड़ौदा से निकलता हूँ तो सभी महात्माओं को बताता हूँ! एक महात्मा ने लाल झंडी दिखाई तब मैंने कहा, 'रुको भाई। अरे! गाड़ी रोको।' दो सौ महात्माओं में से एकाध महात्मा लाल झंडी दिखाए तो गाड़ी रुकवा देते हैं। 'क्या बात है, बताओ', उसका समाधान करवाकर फिर जाते हैं क्योंकि मैं उन महात्माओं के ताबे में हूँ, वे मेरे ताबे में नहीं हैं। अत: अपने महात्माओं को तो सभी के ताबे में रहना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : रोज़ सुबह उठने से लेकर रात तक उनका नित्य कार्यक्रम क्या होना चाहिए?

दादाश्री : यहाँ पर ऐसा कोई नियम नहीं है। जहाँ नियम होता है, वहाँ हिसाब रखना होता है। यहाँ पर तो नो लॉ, लॉ है। अपना यह निश्चय है कि 'ऐसा होना चाहिए, यह नहीं होना चाहिए'। लेकिन फिर भी जो निकले, वही सही। कोई सिगरेट पीता हो और वह बाहर जाकर पी भी आता हो लेकिन मन में ऐसा रहना चाहिए कि 'ऐसा नहीं होना चाहिए'।

प्रश्नकर्ता : ऐसा कुछ है क्या कि सुबह जल्दी उठना चाहिए?

दादाश्री : नहीं, भाई। कोई जल्दी उठता है, तीन बजे से उठकर गरम पानी के लिए आग जलाने वाले भी हैं और कोई देर से उठता हो और साढ़े नौ बज जाएँ, तब मैं कहता हूँ कि 'भाई, सूर्यनारायण कब से उठकर यहाँ आ गए हैं। तू ज़रा सोच तो सही! ये इतने बड़े, उठकर आ गए हैं। तू उनसे भी कितना बड़ा है?' तब वह जल्दी-जल्दी उठ जाता है। क्योंकि तीन बजे से उठकर यहाँ पर आने वाले भी हैं और साढ़े नौ वाले भी हैं। हर तरह के लोग हैं!

प्रश्नकर्ता : जिन लोगों ने यह 'ज्ञान' लिया है, उन्हें रात को किस तरह से सो जाना है? वह समझाइए।

दादाश्री : खुद शुद्धात्मा बनकर बाकी सभी चीज़ों से कहकर कि 'हम अब ऑफिस बंद कर देते हैं। आप सुबह आना, साढ़े छ: बजे। अब अभी ऑफिस बंद है।' जो भी विचार आ रहे हों उन सब से कह देना। 'आज पहला दिन है इसलिए रिक्वेस्ट करते हैं कि अब आप यहाँ पर मत आना। वर्ना आपका अपमान हो जाएगा इसलिए फिर से मत आना।' तब फिर वे बंद हो जाएँगे। और 'मैं शुद्धात्मा हूँ, शुद्धात्मा हूँ' इस तरह धीरे से अपने ही कान को सुनाई दे, उस तरह बोलते हुए दादा के चित्रपट का निदिध्यासन करते-करते सो जाना है।

(परम पूज्य दादाश्री की ज्ञानवाणी में से संकलित)

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : 9328661166-77, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **मुंबई :** 9323528901, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** 9924341188, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा :** 9574001557, **गोधरा :** 9723707738, **जामनगर :** 9924343687. **अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद (दादा दर्शन) :** (079) 27540408, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली :** 9810098564, **बैंगलूर :** 9590979099, **कोलकता :** 9830080820 **यु.एस.ए.-केनेडा:** +1 877-505-3232, **यु.के.:** +44 330-111-3232, **ऑस्ट्रेलिया:** +61 402179706

पूज्य नीरू माँ/पूज्य दीपक भाई को देखिए टी.वी. चैनल पर

भारत

- 'दूरदर्शन गिरनार' पर रोज़ सुबह 7-30 से 8-30, रात 9 से 10
- 'अरिहंत' चैनल पर रोज़ सुबह 2-50 से 3-50, दोपहर 2-30 से 3, रात 8 से 9
- 'वालम' पर रोज़ शाम 6 से 6-30 (सिर्फ गुजरात राज्य में)
- 'स्वरश्री' पर हर रोज़ शाम 6 से 6-30 (सिर्फ गुजरात राज्य में)
- 'दूरदर्शन उत्तरप्रदेश' पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8, रात 8-30 से 9-30 (हिन्दी में)
- 'साधना' पर रोज़ सुबह 7-50 से 8-15 तथा रात 9-30 से 9-55 (हिन्दी में)
- 'उड़ीसा प्लस' टी.वी. पर रोज़ सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में-केवल उड़ीसा राज्य में)
- 'दूरदर्शन सह्याद्रि' पर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)
- 'आस्था कन्नड़ा' पर रोज़ दोपहर 12 से 12-30 तथा शाम 4-30 से 5 (कन्नड़ा में)

USA - Canada

- 'TV Asia' पर रोज़ सुबह 7-30 से 8 EST

U K

- 'वीनस' टी.वी. पर रोज़ सुबह 8 से 8-30 GMT (हिन्दी में)
- 'वीनस' टी.वी. पर रोज़ सुबह 8-30 से 9 GMT
- 'MA TV' पर रोज़ शाम 5-30 से 6-30 GMT

Australia

- 'Rishtey' पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 तथा दोपहर 1-30 से 2 (हिन्दी में)

Fiji - NZ - Singapore - SA - UAE

- 'Rishtey' पर हर रोज़ सुबह 6 से 6-30 तथा 7-30 से 8 (हिन्दी में)

USA - UK - Africa - Australia

- 'आस्था ग्लोबल' पर सोम से शुक्र रात 10 से 10-30 IST
  (डिश टी.वी. चैनल UK -849, USA-719) (गुजराती और हिन्दी में)

सितम्बर 2021
वर्ष-16 अंक-11
अखंड क्रमांक - 191

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2021-2023
Valid up to 31-12-2023
LPWP Licence No. PMG/NG/036/2021-2023
Valid up to 31-12-2023
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

ज्ञानी चरणों में अहंकार विलय होता है

अहंकार यानी अज्ञानता। आत्मा और शरीर दोनों अलग हैं इसके बावजूद भी 'मैं कर रहा हूँ', ऐसा जो भाव हो जाता है, वह इगोइज़म है। उस इगोइज़म का रूट कॉज़ (मूल कारण) निकाल देना है। 'मैं कर रहा हूँ या कौन कर रहा है यह', वह अज्ञानता निकाल देनी चाहिए। यह तो अज्ञानता की पच्चड़ है, अन्य कोई पच्चड़ नहीं है। आत्मा अज्ञानी नहीं है, आत्मा ज्ञानी है। अहंकार ही कर्म बाँधता है। उस अहंकार को निकाल दिया जाए तो कर्म बंधन रुक जाएगा और यह संसार विराम पाएगा। लेकिन जिनके पास इगोइज़म है वहाँ पर अपना इगोइज़म कैसे निकल पाएगा ? अत: यदि मेरे पास आओगे तो मैं आपका इगोइज़म निकाल दूँगा।

– दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Offset, B - 99, GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025.